04 - ईश्वर व माता-पिता में प्रथम कौन?

05 - समृद्ध राष्ट्र की कहानी कहते भारत के लक्ष्मी मंदिर

06 - दीपोत्सव पर्व को लेकर तैयारियां पूरी, आंगन में सजने लगी आकर्षक...

07 - असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय

सुबह सवेरे

A Daily News Magazine

भोपाल

सोमवार, 20 अक्टूबर, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 52, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

दीपोत्सव

राममय श्री अयोध्या धाम में आज 26 लाख 17 हजार 215 दीपों की जगमगाती ज्योति ने विश्व-रिकॉर्ड रचते हुए सनातन संस्कृति के अमर तेज को पुनः प्रज्ज्वलित किया है।
इस संदेश के साथ यह फोटो उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया।

सुप्रभात

छज्जों में, छत में, आले में,
तुलसी के नन्हें थाले में,
यह कौन रहा है दृग को ठग?
जगमग जगमग जगमग जगमग!

पर्वत में, नदियों, नहरों में,
प्यारी प्यारी सी लहरों में,
तैरते दीप कैसे भग-भग!
जगमग जगमग जगमग जगमग!

राजा के घर, कंगले के घर,
हैं वही दीप सुंदर सुंदर!
दिवाली की श्री है पग-पग,
जगमग जगमग जगमग जगमग!

– सोहनलाल द्विवेदी

दीपावली की शुभकामनाएं

प्रकाश पर्व दीपावली के उपलक्ष्य में सुबह सवेरे कार्यालय में दि. 20 व 21 अक्टूबर को अवकाश रहेगा अखबार का अगला अंक अब 23 अक्टूबर 2025 को प्रकाशित होगा। सुबह सवेरे के सभी पाठकों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं।

– सं.

गोवर्धन पर्व : प्रकृति से सह-अस्तित्व और समग्र विकास का उत्सव

आप सभी को दीपोत्सव, गोवर्धन पूजा और अन्नकूट उत्सव की शुभकामनाएं और बधाई...

डॉ. मोहन यादव
(लेखक मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं)

दीपावली के उत्सव की श्रृंखला में आरोग्य, आर्थिक समृद्धि, परिवार एवं समाज समन्वय और पर्यावरण संरक्षण का संदेश है।

दीपावली के अगले दिन होने वाला गोवर्धन पर्व प्रकृति, पर्वत और गौ-वंश संरक्षण की भारतीय प्राचीन परंपरा का प्रतीक है। इस परंपरा का साक्षात दर्शन हमें भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत को अपनी उंगली पर धारण करने से मिलता है। मानवता की रक्षा के इसी पावन स्मृति में गोवर्धन पूजन किया जाता है। इस पर्व में गौ-धन के संवर्धन की प्रेरणा है जो भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था और पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है। इसमें भारतीय समाज की वह जीवनदृष्टि समाहित है, जिसमें प्रकृति, पशु, मनुष्य और देवत्व का संतुलन देखने को मिलता है।

मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि हम प्रदेशभर में गोवर्धन पर्व का आयोजन कर रहे हैं। यह पर्व सभी जिलों में लोक अनुष्ठान और सांस्कृतिक परंपराओं के अनुसार मनाया जा रहा है। आयोजन में पशुपालन तथा दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में नवाचार करने वाले उद्यमियों को सम्मानित किया जायेगा। इस अवसर पर पशुपालन, कृषि और सहकारिता विभाग की जन-कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी के साथ लोगों को जोड़ने और ग्रामीण आजीविका के लिए दुग्ध उत्पादन और वृंदावन ग्राम योजना के विस्तार की गतिविधियों का संचालन शुरू किया गया है।

हमारे पर्व-परंपराओं में प्रकृति से सह-अस्तित्व और समग्र विकास का भाव है। इसी कड़ी में गोवर्धन पर्व प्रकृति और प्राणियों के बीच समन्वय और संरक्षण से जुड़ा है। इस दिन गोबर से पर्वत का प्रतीक बनाकर उसकी पूजा की जाती है। पर्वत का प्राकृतिक संतुलन में महत्वपूर्ण योगदान है। पर्वत जल संरक्षण, संवर्धन और ऋतुओं के संतुलन का समन्वय करते हैं। इससे नदी, तालाब तथा अन्य जलस्रोत सुरक्षित रहते हैं। गोवर्धन पूजन में पर्यावरण को सुरक्षित रखने का संकल्प भी है। हमारा प्रयास है कि इस पर्व के माध्यम से प्रकृति और पशुधन का महत्व नई पीढ़ी तक पहुंचे।

मध्यप्रदेश अपनी प्राकृतिक संपदा के साथ गौ-वंश से समृद्ध है। गौ-माता में 33 कोटि देवी-देवताओं का वास होता है। हमने वर्ष 2024-25 को गौ-संरक्षण एवं संवर्धन वर्ष के रूप में मनाया। हम पशुपालक किसानों की आय को दोगुना करने के लिए प्रयासरत हैं। देश के दुग्ध उत्पादन का 9 प्रतिशत मध्यप्रदेश में होता है इसे 20 प्रतिशत तक करना हमारा लक्ष्य है। इसके लिए प्रदेश के गांव-गांव में दुग्ध समृद्धि संपर्क अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के अंतर्गत घर-घर जाकर पशुपालकों को पशुओं में नस्ल सुधार, कृत्रिम गर्भाधान, पशुओं के टीकाकरण, स्वास्थ्य रक्षा, संतुलित पशु आहार, पशु पोषण आदि के बारे में तकनीकी और व्यवहारिक जानकारी दी जा रही है। इन सभी प्रयासों से हम मध्यप्रदेश को दुग्ध केपिटल बनायेंगे।

मुझे इस बात का संतोष है कि मध्यप्रदेश सरकार गौ-पालन, गौ-संवर्धन के लिए संकल्पित है। हमने गौ-शालाओं के लिए अनुदान को 20 रुपये प्रति गौ-वंश प्रतिदिन से बढ़ाकर 40 रुपये प्रति गौ-वंश प्रतिदिन किया है। गौ-वंश के भरण-पोषण के लिए दो वर्ष पहले बजट 90 करोड़ रुपये था, जिसे 250 करोड़ रुपये किया गया और अब यह राशि बढ़ाकर 600 करोड़ रुपये करने का लक्ष्य है।

मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में ग्वालियर में देश की पहली आधुनिक और आत्मनिर्भर गौ-शाला परिसर में कम्प्रेस्ड बायो गैस संयंत्र की स्थापना की गई है। प्रदेश में नवीन गौ-शालाओं का निर्माण, प्रति गाय अनुदान राशि बढ़ाने, गौ-उत्पादकों को प्रोत्साहन, गोबर से सीएनजी निर्मित करने वाले आधुनिक प्लांट की स्थापना तथा नेशनल डेयरी विकास बोर्ड के साथ करार जैसे नवाचार किये गये हैं।

हमारे लिए खुशी की बात है कि मध्यप्रदेश में किसानों और पशुपालकों को लाभान्वित करने के लिये 2900 गौ-शालाएं हैं। मुख्यमंत्री गौ-सेवा योजना के अंतर्गत 2203 गौ-शालाओं का संचालन हो रहा है। विगत एक वर्ष में एक हजार से अधिक नवीन गौ-शालाएं प्रारंभ की गई हैं। गौ-वंश के आश्रय एवं भरण-पोषण के लिए नगर पालिक निगम ग्वालियर, उज्जैन और इंदौर में गौ-शालाएं खोली गई हैं। भोपाल में 69.18 एकड़ भूमि पर 10 हजार गौ-वंश क्षमता की गौ-शाला का निर्माण किया जा रहा है। गौ-अभयारण्य अनुसंधान एवं उत्पादन केन्द्र, सालरिया, जिला आगर-मालवा में वर्तमान में 6500 गौ-वंश का पालन-पोषण किया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में गौ-वंश का संवर्धन दुग्ध उत्पादन से रोज़गार और स्वरोज़गार का बड़ा स्रोत होगा। महिलाओं की आत्मनिर्भरता में भी दुग्ध व्यवसाय का महत्वपूर्ण योगदान है।

प्रदेश में जिस तरह खेती को लाभ का व्यवसाय बनाने के लिये किसानों को प्रोत्साहित किया गया और हमारे किसान भाइयों ने उपज का भंडार भर दिया, उसी तरह दुग्ध उत्पादन करने वाले पशुपालकों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। इससे प्रदेश में गौ-वंश पालन बढ़ेगा, कृषि की पारंपरिक व्यवस्था को आधार प्राप्त होगा और प्राकृतिक खेती को सहयोग मिलेगा। रसायन रहित पौष्टिक अन्न तथा अन्य वस्तुओं का उत्पादन जहां स्वास्थ्य के लिये लाभदायी होगा, वहीं प्रदेश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

गौ-संवर्धन रोज़गार सृजन के साथ समाज को सांस्कृतिक मजबूती प्रदान करता है और सु-संस्कृत, स्वस्थ और सबल समाज का निर्माण करता है, जिससे सतत और समर्थ अर्थव्यवस्था का विकास संभव है। यह मध्यप्रदेश का सौभाग्य है कि यहां विंध्याचल और सतपुड़ा पर्वत की विपुल वन संपदा है। प्रदेश की समृद्धि और आत्मनिर्भरता पर्वतों और गौ-वंश के संरक्षण से जुड़ी है, जो मध्यप्रदेश और देश की प्रगति का आधार है। मुझे प्रसन्नता है कि प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश सरकार गौ-सेवा, जैविक कृषि और दुग्ध उत्पादन से ग्रामीण भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए संकल्पित है।

गोवर्धन पर्व के अवसर पर मेरा प्रदेश की जनता से आग्रह है कि हम सब मिलकर गोवर्धन पर्व-परंपरा के संकल्प को आत्मसात करें और विकसित मध्यप्रदेश के निर्माण में सहभागी बनें।

बांके बिहारी मंदिर में दूसरे दिन भी खोला गया खजाना

खजाने में कीमती नग

- 3 चांदी की गुलाल लगी और सोने की एक चमचमाती छड़ी मिली

मथुरा (एजेंसी)। बांके बिहारी मंदिर में बने तोशाखाना में रविवार को दूसरे दिन खजाना खोला गया। खजाने के मुख्य दरवाजे को ग्राइंडर से काटने के बाद टीम और कमेटी अंदर गई। इसके बाद सीढ़ियों के जरिए नीचे जाने वाला तहखाना भी मिला। खजाना में मुख्य दरवाजे से अंदर एक कमरे में लकड़ी के दो संदूक मिले। एक बड़ा और छोटा।

जिसमें बर्तन और नग मिले हैं। वहीं कमरे में एक चमचमाती सोने की छड़ी और गुलाल से सनी हुई 3 चांदी की छड़ें मिली हैं। इससे पहले, कल बांके बिहारी मंदिर के खजाने के दरवाजे के अंदर एक और कमरा मिला था। इस कमरे के नीचे तहखाना मिला था। वहां सीढ़ियां बनी हुई थीं। टीम कल 15 से 20 फीट नीचे ही जा पाई थी। मंदिर परिसर में दिनेश गोस्वामी ने बताया- जो कल प्रक्रिया रह गई थी, उसे आज वहीं से शुरू करके आगे बढ़ाया जा रहा है। वापस फोटोग्राफी करके सील को दिखाते हुए वेल्डिंग को ग्राइंडर से काटा जा रहा है। अब मैं आगे की प्रक्रिया के लिए अंदर जा रहा हूं। दूसरे दिन रविवार को भी खोजबीन चल रही है। पहले दिन कमरे से एक लकड़ी का बॉक्स, पीतल के बर्तन और अखबार मिलने की जानकारी मिली है।

यह तोषखाना आखिरी बार 1971 में खोला गया था। सुरक्षा कारणों और पारदर्शिता बनाए रखने के लिए यह पूरी प्रक्रिया वीडियोग्राफी के तहत की जा रही है। पहले दिन की कार्रवाई पूरी होने के बाद तोषखाने को फिर से सील कर दिया गया था। आज एक बार फिर हाई पावर कमेटी की तरफ से तोषखाने में सर्च ऑपरेशन का काम चल रहा है ताकि खजाने में मौजूद अन्य वस्तुओं, बहुमूल्य आभूषणों और ऐतिहासिक दस्तावेजों का मूल्यांकन किया जा सके। इस ऐतिहासिक कार्रवाई के दौरान मंदिर परिसर और उसके आसपास कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गई है। हालांकि, कुछ सेवायत गोस्वामी समाज के लोगों ने मंदिर की परंपरा में दखलंदाजी बताते हुए इस प्रक्रिया पर विरोध भी जताया है। वहीं, भक्तों में 54 साल बाद खुले इस तोषखने के कमरे को लेकर उत्सुकता बनी हुई है।

एक दीप विश्वशांति के नाम जलाएं !

विशेष संपादकीय
अजय बोकिल

यूं दीपोत्सव उजाले का त्यौहार है, धन समृद्धि और आनंद का पर्व है। यह वैभव की देवी लक्ष्मी को प्रसन्न करने और सदा प्रसन्न रहने की आराधना का पर्व भी है। लेकिन लक्ष्मी वहीं वास और निवास करती है, जहां शांति हो, सौहार्द्र हो, परस्पर प्रेम और सहकार हो। आज समूची दुनिया को जिस चीज की सबसे ज्यादा जरूरत है, वह है शांति की। सुकून की, संवेदना और करूणा के प्रकाश की। विडंबना यह है कि एक ओर जहां एआई मनुष्य की मेधा को चुनौती दे रहा है तो दूसरी तरफ समूची मानवता युद्धों में उलझकर अपने ही वजूद को खत्म करने पर आमादा है। 21वीं सदी यह वो समय है, जब बीती सदी में दूसरे महायुद्ध के बाद दुनिया के सबसे ज्यादा देश आपसी युद्धों और आंतरिक संघर्षों में उलझे हैं। महायुद्ध ने महाविनाश के बाद तो फिर भी शांति मार्ग अख्तियार कर मानव सभ्यता के विकास की नई इबारत लिखी, लेकिन आज जिस तरह राक्षसी जिद और शैतानी जुनून के साथ दसियों युद्ध लड़े जा रहे हैं, युद्ध विराम के भी स्वार्थ जनित दावे किए जा रहे हैं, वह मनुष्य के ऐहिक स्वार्थों की पराकाष्ठा है। इसका अंत किस रूप में होगा, कहना मुश्किल है।

'जिनेवा एकेडमी ऑफ इंटरनेशनल ह्यूमेनिटेरियन लॉ' की हालिया रिपोर्ट के मुताबिक आज दुनिया के विभिन्न देशों में 110 सशस्त्र संघर्ष चल रहे हैं। इनमें से 56 तो ऐसे हैं, जिन्हें बाकायदा 'युद्ध' कहा जा सकता है। इन संघर्षों से सर्वाधिक प्रभावित एशिया, यूरोप, अफ्रीका महाद्वीप हैं और दक्षिण अमेरिका में भी इसके तेज होने की सुगबुगाहट है। ये युद्ध अपनी जमीन को बचाने, दूसरे की जमीन कब्जाने, सत्ता पर काबिज रहने अथवा सत्ता से हटाने, व्यवस्था के प्रति जनाक्रोश, विदेशी षड्यंत्र, युवाओं के विद्रोह, आर्थिक-सामाजिक विषमता, नस्लभेद, धार्मिक दुराग्रह और राजनीतिक अधिकारों की मांग जैसे कारणों का परिणाम है। 'काउंसिल ऑन फारेन रिलेशन्स ग्लोबल कॉन्फ्लिक्ट' ने 32 सशस्त्र संघर्षों की पहचान की है, जो इन दिनो यूक्रेन, सूडान, सीरिया, यमन, इथोपिया, सेन्ट्रल अफ्रीकन रिपब्लिक तथा डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो में चल रहे हैं। अफ्रीका महाद्वीप के 15 देश आज भीषण सशस्त्र संघर्षों, आंतरिक विद्रोहों, भयंकर मारकाट और जनसंहारों से जूझ रहे हैं। यह वो समय है, जब वैश्विक शांति की बात करने वाली ताकतें सबसे कमजोर स्थिति में हैं। इन हालात में इस दीपावली सुख शांति की देवी लक्ष्मी का आह्वान केवल एक धार्मिक कर्मकांड भर नहीं रहे। दरअसल लक्ष्मी का कृपावंत होना मात्र अपने, अपने परिवार, समुदाय या देश के कल्याण का भर सूचक नहीं है। इस दीपोत्सव को वैश्विक शांति की उस गुहार के रूप में भी मनाया जाना चाहिए, जो दुनिया को मनुष्य मात्र के रहने, जीने और फलने-फूलने के लायक बना सके। क्योंकि लक्ष्मी वहीं वास करती है, जहां सुख-चैन और शांति रहती है। और शांति वहीं रहती है, जहां सुख चैन रहता है। कलह और झगड़े से भरा घर लक्ष्मी का निवास स्थान नहीं बन पाता। चाणक्य नीति कहती है कि जिन घरों (या देशों) में कलह और अशांति होती है, वहाँ लक्ष्मी का वास नहीं हो पाता। नैतिक आचरण और शांति से ही धन स्थिर रहता है। तो आइए, एक दीप इस बार विश्व शांति के नाम जलाएं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 30 °c | न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ सोमवार, 20 अक्टूबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

प्राकृतिक सौंदर्य और ऐतिहासिक विरासत को सुरक्षित रखते हुए होगा चित्रकूट का विकास : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि चित्रकूट के प्राकृतिक सौंदर्य और ऐतिहासिक विरासत को सुरक्षित रखते हुए इसका विकास किया जाएगा। चित्रकूट में बड़े निर्माण कार्यों की आवश्यकता नहीं है। मंदाकिनी नदी स्वच्छ और सदानीरा बनी रहे, भगवान कामतानाथ के सुगमता से दर्शन हो सके और भक्तों को सरलता से भोजन प्रसाद मिल सके ऐसे निर्माण कार्य किए जाएंगे। चित्रकूट का विकास प्रबुद्धजन, संतों और आमजन के सुझाव के आधार पर होगा। भगवान श्रीराम की तपोभूमि चित्रकूट को धार्मिक पर्यटन और ग्रामीण पर्यटन का केंद्र बनायेंगे। चित्रकूट में सड़क चौड़ीकरण, परिक्रमा पथ के सौंदर्यीकरण और धार्मिक स्थलों के विकास के कार्य तेजी से पूरे किये जायेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रविवार को चित्रकूट में आरोग्यम में प्रबुद्धजन से चित्रकूट के विकास पर चर्चा के दौरान यह बात कही।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि चित्रकूट में विकास के लिए 163 स्थानों पर लोगों ने स्वेच्छा से अपने भवन तोड़कर जमीन उपलब्ध कराई हैं। यह बहुत सराहनीय पहल है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए लगातार प्रयास किया जा रहे हैं। चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय तथा दीनदयाल शोध संस्थान किसानों और युवाओं को पशुपालन की आधुनिक तकनीक देकर दुग्ध उत्पादन बढ़ाने में सहयोग करें। चित्रकूट के विकास के लिए जारी 2800 करोड रूपये के निर्माण

कार्य अगले वर्ष अप्रैल माह तक पूरे हो जायेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि होम-स्टे को बढावा देकर ग्रामीण पर्यटन विकास के साथ रोजगार के नये अवसर मिलेंगे। मुख्यमंत्री ने सभी को दीपावली की शुभकामनायें दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कलेक्टर सतना संतो, प्रबुद्ध और आमजनता से चित्रकूट के विकास के लिए सुझाव प्राप्त कर उसके अनुरूप कार्य योजना तैयार करें। मुख्यमंत्री ने आरोग्य में भारतरत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख की प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित किये। सांसद श्री गणेश सिंह ने कहा कि दौरी सागर निर्माण की बाधाएँ दूर की जाएं, जिससे निर्माण कार्य शुरू हो सके। दौरी सागर बांध बनने से मंदाकिनी नदी को नया जीवन मिलेगा। चित्रकूट के विकास के लिए शानदार ब्लूप्रिन्ट तैयार किया गया है। इसका क्रियान्वयन होते ही चित्रकूट शानदार धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित हो जाएगा। बैठक में कलेक्टर डॉ. सतीश कुमार एस ने चित्रकूट के विकास के लिए बनाई गई कार्ययोजना की जानकारी देते हुए बताया कि चित्रकूट में समग्र विकास के लिए 5 हजार करोड़ की कार्ययोजना तैयार की गई है। इसमें से 2800 करोड रुपए के निर्माण कार्य आगामी माह अप्रैल तक पूरे हो जाएंगे। कार्ययोजना में नगर वन निर्माण, घाट निर्माण, सड़कों के विकास, सौंदर्यीकरण मंदाकिनी नदी की साफ-सफाई तथा घाट निर्माण परिक्रमा पथ के विकास जैसे कार्य शामिल हैं। कार्ययोजना में मझगवां में औद्योगिक इकाइयों और शिक्षण संस्थानों की स्थापना का प्रस्ताव भी है।

मुख्यमंत्री ने चित्रकूट के पंचवटी घाट पर किया दीपदान

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने चित्रकूट प्रवास के दौरान दीपावली मेला के अवसर पर आरोग्य धाम में मां मंदाकिनी के पंचवटी घाट पर दीपदान किया। उन्होंने प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि की कामना के साथ दीपावली की शुभकामनायें दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश की सनातन संस्कृति समृद्ध हो रही है। मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश की सरकार मिलकर चित्रकूट के आध्यात्मिक, पर्यटन और श्रद्धालुओं की सुविधाओं के विकास के लिए अनेक कार्य कर रही है। आगामी समय में चित्रकूट का वैभव तथा गौरव और भी बढ़ेगा।

बच्चों के साथ बांटी दीपावली की खुशियाँ

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पंचवटी घाट पर श्रीराम के गुणों पर केन्द्रित प्रदर्शनी का अवलोकन किया। उन्होंने कार्यक्रम स्थल पर दीवारी नृत्य कर रहे कलाकार दलों के बच्चों को प्रोत्साहित किया और बच्चों के बीच पहुंचकर मिष्ठान और उपहार देकर दीपावली की खुशियाँ बांटी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पंचवटी में चित्रकूट के साधु-संतों से भेंटकर उनका सम्मान भी किया।

देश में अब अंतिम दौर में पहुंचा 'रेड कॉरिडोर'

● 11 जिलों तक सिमटा माओवाद ,अब सफाए की ओर बढ़े कदम

मोदी ने कहा-निर्णायक दौर में पहुंची नक्सलवाद के खिलाफ लड़ाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में दशकों से जारी माओवादी आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई अब अपने निर्णायक दौर में पहुंच गई है। गृह मंत्रालय के ताजा आंकड़ों के मुताबिक, 2014 में माओवादी आतंकवाद प्रभावित 182 जिलों की तुलना में अक्टूबर 2025 में केवल 11 जिलों तक इनका आतंक रह गया है। मंत्रालय ने उम्मीद जताई कि 31 मार्च 2026 तक कुख्यात रेड कॉरिडोर भी इतिहास की बात हो जाएगी। बीते पांच दशक से नक्सलवाद की मार झेल रहे तमाम जिलों और गांवों में अब पीएम मोदी के नेतृत्व में अभूतपूर्व विकास और प्रगति देखी जा रही है। इन जिलों को हिंसा नहीं अब विकास के जरिये परिभाषित किया जा रहा है। गृह मंत्रालय के मुताबिक बीते 75 घंटों में 303 नक्सल कैडर ने आत्मसमर्पण किया है। हाल के वर्षों में ये काफी बड़ी संख्या है। बता दें कि शुक्रवार को पीएम नरेन्द्र मोदी ने भी एक कार्यक्रम में कहा था कि वह दिन दूर नहीं जब देश पूरी तरह से नक्सलवाद से मुक्त हो जाएगा और इस बार इन इलाकों में माओवादी आतंकवाद से आजादी मिलने की खुशी में असल मायने में दिवाली का जश्न होगा। उन्होंने कांग्रेस पर हमला करते हुए कहा था कि केंद्र में कांग्रेस शासन के दौरान अर्बन नक्सलियों का एक पूरा इकोसिस्टम काम करता था। ये अर्बन नक्सल तब और अब भी इस कदर हावी हैं कि वे माओवादी आतंकवाद की घटनाओं को छिपाने के लिए बड़े पैमाने पर अभियान चलाते हैं ताकि इनसे जुड़ी खबरें देशवासियों के सामने न आने पाएं।

माओवादी आतंकवाद ने लोगों को जख्म दिए

यहां तक कि उन्होंने प्रेस कान्फ्रेंस भी की, लेकिन आप में से शायद ही किसी ने इनकी खबरें देखी या सुनी होंगी। उन्होंने कहा कि जो लोग माओवादी आतंकवाद के ठेकेदार बनते हैं, उन्होंने इन पीड़ितों की कहानियां भारत के लोगों तक नहीं पहुंचने दीं। कांग्रेस के इकोसिस्टम ने ये सुनिश्चित किया कि इस मुद्दे पर कभी बात न होने पाए। पीएम मोदी ने कहा कि ऐसा भी दौर था जब देश का लगभग हर राज्य नक्सल हिंसा और माओवादी आतंकवाद से प्रभावित था। उन्होंने कहा कि पूरे देश में संविधान लागू था, लेकिन रेड कारिडोर में ये पूरी तरह से गायब था। और मैं पूरी जिम्मेदारी से कहता हूं कि जो लोग संविधान की किताब को अपने सिर पर लेकर नाचते हैं, वे आज भी दिन-रात इन माओवादी आतंकवादियों के हितों की रक्षा में लगे रहते हैं, जिनका संविधान में विश्वास ही नहीं है।

शाम ढलते ही घर से बाहर कदम रखना खतरनाक होता था

पीएम ने कहा कि सरकारें चुनी जाती थीं, लेकिन रेड कॉरिडोर में इनका कोई प्रभाव या वैधता नहीं होती थी। शाम ढलते ही घर से बाहर कदम रखना खतरनाक होता था और जनता की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार लोगों को भी सुरक्षा घेरे में चलना पड़ता था। बीते 50-55 साल में हजारों लोगों को माओवादी आतंकवाद की वजह से जान गंवानी पड़ी।

गरीब विचाराधीन कैदियों की जमानत देगी सरकार

● सुप्रीम कोर्ट का बड़ा फैसला, अब सरकार भरेगी राशि

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने एक अनूठी SOP तैयार की है, जिसमें निर्देश दिया गया कि अगर कोई गरीब व्यक्ति जमानत के लिए आर्थिक गारंटी देने में असमर्थ है, तो सरकार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (DLSA) के जरिए इसे मुहैया करेगी। इस तरह उसकी रिहाई सुनिश्चित की जाएगी। अदालत ने यह एसओपी सीनियर वकील सिद्धार्थ लूथरा और अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ऐश्वर्या भाटी के सुझावों के बाद तैयार की। यह मामला एससी ने स्वत : संज्ञान में लिया, जब उसे पता चला कि हजारों विचाराधीन कैदी जमानत मिलने के बावजूद केवल इसलिए जेल में बंद हैं क्योंकि वे जमानत बांड या गारंटर प्रदान

नहीं कर पा रहे हैं। जज एमएम सुंदरेश और एससी शर्मा की पीठ ने कहा कि DLSA एक लाख रुपये तक की जमानत राशि भर सकता है। अगर ट्रायल कोर्ट ने इससे अधिक राशि तय की है, तो डीएलएसए इसे कम करने के लिए आवेदन दायर करेगा। पीठ ने कहा कि अगर जमानत मिलने के 7 दिनों के भीतर विचाराधीन कैदी को रिहा नहीं किया जाता, तो जेल प्रशासन DLSA सचिव को सूचित करेगा। सचिव तुरंत एक व्यक्ति को यह जांचने के लिए नियुक्त करेगा कि क्या कैदी के पास अपने बचत खाते में धनराशि है। यदि आरोपी के पास पैसे नहीं हैं, तो जिला स्तर की सशक्त समिति DLSA की सिफारिश पर 5 दिनों के भीतर जमानत के लिए धनराशि जारी करने का निर्देश देगी।

दिवाली से पहले चंद्रयान-2 ने भी भेजी खुशखबरी

सूर्य और चांद के 'रिश्ते' पर इसरो ने दी बड़ी जानकारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिवाली के शुभ मौके से पहले चंद्रयान ने भी एक खुशखबरी भेजी है। इसरो के मुताबिक चंद्रयान-2 मिशन ने अपने वैज्ञानिक उपकरणों की मदद से पहली बार यह पता लगाया कि सूरज से निकलने वाली कोरोनल मास इजेक्शन (सीएमई) का चंद्रमा पर क्या असर पड़ता है। सूर्य और चंद्रमा के बीच रिश्ते को लेकर यह बड़ी खोज मानी जा रही है। इसरो ने कहा, इस जानकारी से चंद्रमा के बाह्यमंडल, चंद्रमा के बहुत पतले वायुमंडल और उसकी सतह पर अंतरिक्ष मौसम के प्रभाव को समझने में मदद मिलेगी। श्रीहरिकोटा से 22 जुलाई 2019 को जीएसएलवी-एमके3-एम1 रॉकेट के जरिये प्रक्षेपित किए गए चंद्रयान-2 में आठ वैज्ञानिक उपकरण थे और 20 अगस्त 2019 को चंद्रयान-2 सफलतापूर्वक चंद्रमा की कक्षा में पहुंचा। इसरो की एक विज्ञप्ति के अनुसार, चंद्रयान-2 पर लगे उपकरणों में से एक– 'चंद्राज एटमॉस्फेरिक कॉम्पोजिशनल एक्सप्लोरर-2' (सीएचएसीई-2) ने सूरज से निकलने वाली कोरोनल मास इजेक्शन का चंद्रमा के बाहरी वायुमंडल पर पड़ने वाला असर रिकॉर्ड किया है। सीएचएसीई-2 उपकरण का मुख्य उद्देश्य चंद्रमा के तटस्थ बाहरी वायुमंडल (न्यूट्रल एक्सोस्फीयर) की संरचना, उसका विस्तार और उसमें होने वाले बदलावों का अध्ययन करना है। कोरोनल मास इजेक्शन सौरमंडल में वाले वाले शक्तिशाली विस्फोट होते हैं। इस दौरान सूर्य हीलियम और हाइड्रोजन आयन छोड़ता है। चांद पर इसका काफी असह होता है। इसका कारण है कि चांद पर वायुमंडल नहीं है और यहां कोई बड़ा चुंबकीय क्षेत्र भी नहीं है।

सूर्य की किरणों और सौर हवा से बनता है एक्सोस्फीयर

उल्कापिंडों के टकराने या फिर सूर्य की किरणों और सौर हवा से यह एक्सोस्फीयर बनता है। इसरो के मुताबिक, इस घटना के दौरान न्यूट्रल एटम और मॉलिक्यूल की कुल संख्या (नंबर डेंसिटी) एक ऑर्डर ऑफ मैग्नीट्यूड से ज्यादा बढ़ गई। इससे लंबे समय से चले आ रहे थ्योरेटिकल मॉडल्स की पुष्टि हुई, लेकिन इसे पहले कभी सीधे तौर पर नहीं देखा गया था। स्पेस एजेंसी ने अपने बयान में कहा, 'यह बढ़ोतरी पहले के थ्योरेटिकल मॉडल्स जैसी ही है, जिन्होंने ऐसे असर का अनुमान लगाया था, लेकिन चंद्रयान-2 पर मौजूद CHACE-2 ने इसे पहली बार देखा है। सूर्य हमारा सबसे नजदीकी तारा है। ये आग का गोला है जो लाखों डिग्री सेल्सियस गर्म है और पृथ्वी के आकार से लाखों गुना बड़ा है। सूर्य के सतह पर हर समय हजारों-लाखों विस्फोट होते रहते हैं। इन विस्फोटों की वजह वहां मौजूद चार्ज प्लाज्मा, प्रचंड तापमान और मैग्नेटिक फील्ड है। इसकी वजह से भयानक तूफान उठता है और अंतरिक्ष में बहुत सा चार्ज प्लाज्मा फैल जाता है। इसे ही कोरोनल मास इजेक्शन कहते हैं। दरअसल, ऑब्जर्वेशन का मौका बहुत ही कम मिलता है, जो पिछले साल 10 मई को उस वक्त शुरू हुआ था जब सूरज से चांद की ओर सीएमई की एक श्रंखला फेंकी गई थी। इस शक्तिशाली सोलर एक्टिविटी की वजह से चांद की सतह पर मौजूद एटम टूटकर चांद के एक्सोस्फीयर में चले गए और इससे कुछ समय के लिए उसकी डेंसिटी और प्रेशर बढ़ गया।

न एनडीए में जगह, न महागठबंधन ने डाली घास

बिहार में पशुपति नहीं बन पाए 'पारस', रण में पड़े अकेले

पटना (एजेंसी)। राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी के अध्यक्ष पशुपति कुमार पारस ने शनिवार को घोषणा की कि उनकी पार्टी नवंबर में होने वाले बिहार विधानसभा चुनाव अकेले लड़ेगी। पारस ने स्पष्ट किया कि विपक्षी महागठबंधन में शामिल होने की उनकी कोशिश सफल नहीं हो सकी। जिसके बाद उन्होंने मजबूरी में यह फैसला लिया है। आरएलजेपी के 33 उम्मीदवारों की सूची की घोषणा करते हुए पशुपति कुमार पारस कहा कि मैंने इस बार महागठबंधन के साथ गठबंधन करने के लिए काफी कोशिश की, लेकिन यह कोशिश नाकाम साबित हुई। 1977 से 2010 के बीच सात बार अलौली (खगड़िया) सीट का प्रतिनिधित्व कर चुके पारस को उम्मीद थी कि राजद के नेतृत्व वाले महागठबंधन से उन्हें कम से कम तीन सीटें मिलेंगी, लेकिन महागठबंधन उनकी राजनीतिक स्थिति से संतुष्ट नहीं थी। लोक जनशक्ति पार्टी (लोजपा) के संस्थापक रामविलास पासवान के छोटे भाई और पूर्व केंद्रीय मंत्री पारस ने 2024 के लोकसभा चुनाव के कुछ ही महीनों बाद भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए से नाता तोड़ लिया था। 2024 के लोकसभा चुनाव में पारस की पार्टी को बिहार में एक भी टिकट नहीं दिया गया था। पारस, जो कम से कम अपनी मौजूदा हाजीपुर सीट पर चुनाव लड़ने पर अड़े थे, उनको चुनाव न लड़ने और एनडीए का समर्थन करने के लिए कहा गया था।

पाकिस्तानी सेना को भारत के बॉर्डर तक खदेड़ देंगे

● तालिबान ने दे दी खुली चेतावनी, चरम पर पहुंचा तनाव

काबुल (एजेंसी)। अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच तनाव चरम पर हैं। पाकिस्तान ने हाल ही में अफगानिस्तान में एयर स्ट्राइक करके सीजफायर का उल्लंघन किया, जिससे तालिबान को भारत के बॉर्डर तक खदेड़ दिया जाएगा। पाकिस्तानी सेना को चेतावनी देते ओमारी ने कहा, अगर अफगानिस्तान और लोगों ने धार्मिक आदेश से हमलावर घोषित कर दिया तो मैं कसम खाता हूं कि तुम्हें

भड़क गया। इस हमले में दस लोगों की जान चली गई, जिसमें उभरते हुए क्रिकेटर्स भी शामिल थे। पाकिस्तान के इस हमले के बाद तालिबान ने उसे सख्त चेतावनी दी है। शहबाज शरीफ के देश को धमकी देते हुए अफगानिस्तान की इंटीरियर मिनिस्ट्री में डिप्टी मंत्री और तालिबान नेता मौलवी मुहम्मद नबी ओमारी ने कहा कि हमले की कोशिश हुई तो पाकिस्तानी सैनिकों भारतीय बॉर्डर तक भी सुरक्षा नहीं मिलेगी। पिछले दिनों अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से पाकिस्तानी आर्मी चीफ आसिम मुनीर और शहबाज शरीफ की मुलाकात पर भी उन्होंने निशाना साधा। तालिबानी मंत्री ने कहा कि पाकिस्तानी सेना सबकुछ दूसरों की इच्छा के हिसाब से ही करती है और हाल ही में सबने शहबाज शरीफ को ट्रंप की चापलूसी करते हुए भी देखा ही होगा।

सात नैनोमीटर कंप्यूटर चिप 2028 तक होगा तैयार

● यह भारत का पहला स्वदेशी चिप होगा, केंद्र ने दी हरी झंडी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत का पहला स्वदेशी डिजाइन किया गया सात नैनोमीटर कंप्यूटर प्रोसेसर 'शक्ति' 2028 तक तैयार होने की उम्मीद है। इसे भविष्य में स्थानीय चिप प्लांट में उत्पादित किया जा सकेगा। आइआईटी मद्रास की टीम ने शनिवार को केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव को यह जानकारी दी। मंत्री के इंटरनेट मीडिया अकाउंट पर पोस्ट किए गए एक वीडियो से पता चलता है कि उन्होंने टीम को चिपसेट के स्वदेशी उत्पादन की तैयारी के लिए हरी झंडी दे दी है, जिसका उपयोग आइटी सर्वर में किया जा सकता है।

सीजफायर के बीच इजरायल ने गाजा पर बोला हमला

अमेरिकी रिपोर्ट के बाद ऐक्शन में आए बेंजामिन नेतन्याहू

तेलअवीव (एजेंसी)। अमेरिका की मध्यस्थता वाले युद्धविराम के बीच बढ़ते तनाव के दौरान इजरायल ने गाजा पर हमला बोल दिया है। यह कार्रवाई अमेरिकी आरोपों के ठीक बाद हुई, जिसमें कहा गया कि हमास ने गाजा के विवादित इलाकों में नागरिकों पर हमले की साजिश रच रहा था, जो युद्धविराम समझौते का स्पष्ट उल्लंघन हो सकता है। इजरायली सेना ने इस हमले पर अभी तक कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया है। कुछ अपुष्ट खबरों के मुताबिक, इजरायल ने राफा क्षेत्र में हवाई हमले किए हैं। रविवार को

रॉयटर्स और अन्य प्रमुख समाचार वेबसाइटों ने इजरायली चैनल 12 के हवाले से खबर दी है। यह घटना फिलिस्तीनी उग्रवादी संगठन हमास के उस खंडन के तुरंत बाद सामने आई, जिसमें अमेरिका के दावों को खारिज किया गया था। अमेरिका ने 'विश्वसनीय खुफिया रिपोर्टों' का हवाला देते हुए आरोप लगाया कि हमास गाजा के निवासियों पर 'तत्काल हमला' करने और उसके बाद संघर्षविराम तोड़ने की योजना बना रहा है। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने शनिवार को सख्त चेतावनी जारी की कि गाजा में युद्ध तब तक नहीं थमेगा जब तक हमास को पूरी तरह हथियारबंद नहीं किया जाता और फिलिस्तीनी क्षेत्रों को विसैन्यीकृत नहीं कर दिया जाता।

यह बयान ऐसे समय आया जब हमास की सैन्य शाखा इज्जेदीन अल-कस्साम ब्रिगेड ने अमेरिका-मध्यस्थ युद्धविराम समझौते के तहत शनिवार रात दो और बंधकों के शव सौंप दिए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पूर्व मुख्यमंत्री स्व. प्रकाशचंद्र सेठी की जयंती पर किया नमन

विधानसभा में श्री सेठी के चित्र पर की पुष्पांजलि अर्पित

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रविवार को प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री प्रकाशचंद्र सेठी की जयंती पर विधानसभा पहुंचकर उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र तोमर द्वारा प्रदेश के पूर्व राज्यपाल, पूर्व मुख्यमंत्री और पूर्व विधानसभा अध्यक्षों को स्मरण करने की परम्परा आरंभ की गई है। मध्यप्रदेश विधानसभा में आरंभ हुई यह पहल सराहनीय है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पूर्व मुख्यमंत्री श्री सेठी का स्मरण करते हुए कहा कि मध्यप्रदेश के विकास में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। राजस्थान के झालावाड़ में जन्में श्री सेठी के राजनैतिक जीवन की शुरुआत उज्जैन से हुई,

वे उज्जैन के सांसद भी रहे, इस नाते उनसे सदा विशेष संबंध की अनुभूति होती है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने श्री सेठी का स्मरण करते हुए कहा कि श्री सेठी ने समर्पित राजनीतिक जीवन और राष्ट्रसेवा के माध्यम से देश और प्रदेश के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया। अपने कार्यकाल में उन्होंने औद्योगिक विकास, प्रशासनिक सुधार और सामाजिक कल्याण की योजनाओं पर विशेष ध्यान दिया। प्रदेश की राजनीति के अलावा उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बनाई। वे केन्द्र सरकार में गृह मंत्री, रक्षा मंत्री, इस्पात खान एवं धातु मंत्रालय के स्वतंत्र प्रभारी मंत्री और वित्त मंत्रालय में राजस्व एवं व्यय मंत्री रहे। वे आज भी उनकी मध्यप्रदेश और भारतीय राजनीति के कुशल, विनम्र और समर्पित नेताओं में गिने जाते हैं।

भोपाल के मारवाड़ी रोड पर बैंक में आग लगी

सेंट्रल बैंक से धुआं निकलते देख बुलाई दमकलें; शार्ट सर्किट बनी वजह

भोपाल (नप्र)। भोपाल के मारवाड़ी रोड स्थित सेंट्रल बैंक ब्रांच में देर रात आग लग गई। राहगीरों ने बैंक के अंदर से धुआं निकलते देखा। इसके बाद दमकलें मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाया। शार्ट सर्किट की वजह से आग लगना सामने आया है। आग से बैंक के कुछ दस्तावेज भी जल गए।

आग लगने के बाद फायर अलॉर्ट सिस्टम भी एक्टिव हो गया। इस वजह से मौके पर भीड़ इकट्ठा हो गई। जूनानी सफाखाना और

फतेहगढ़ से दमकलें मौके पर पहुंची। रात डेढ़ बजे बाद आग पूरी तरह से काबू में आ पाई।

दस्तावेज जल गए

बैंक में आग लगने से कई दस्तावेजों के जलने की खबर है। हालांकि, बैंक प्रबंधन की ओर से यह साफ नहीं किया गया है। बैंक अधिकारी नुकसान का आकलन करने में लगे हैं। दूसरी ओर, रुपए सुरक्षित है।

मौके पर पहुंचने में लग गया समय- दमकलकर्मी राजेंद्र बाथम ने बताया कि आग बुझाने में करीब दो घंटे लगे। शार्ट सर्किट से आग लगी थी। कितना नुकसान हुआ, यह बैंक प्रबंधन आकलन कर रहा है।

संकरी गलियां सबसे बड़ी चुनौती- पुराने शहर के बाजार और रहवासी इलाकों में सड़कें संकरी हैं। इस कारण आग लगने पर बड़े फायर व्हीकल समय पर नहीं पहुंच पाते। कई बार जाम की समस्या भी रहती है, इसलिए छोटे व्हीकल बाजार या रहवासी इलाकों में भेजे जाएंगे। शनिवार-रविवार की रात में मारवाड़ी रोड स्थित सेंट्रल बैंक तक पहुंचने में दमकलकर्मियों को खासी मशक्कत करना पड़ी। लोगों ने भी आगे आकर मदद की और सड़क किनारे खड़ी गाड़ियों को हटाया। जैसे-तैसे दमकल के लिए रास्ता बनाया गया।

मुख्यमंत्री ने दीपावली पर प्रदेशवासियों को दी बधाई और मंगलकामनाएं

भोपाल(नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने दीपावली के पावन पर्व पर समस्त प्रदेशवासियों को बधाई और मंगलकामनाएं दी हैं। मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश देश का हृदय प्रदेश है, यहां की लगभग 9 करोड़ जनता प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प में सरकार के साथ सहभागी है। मध्यप्रदेश के नागरिक विकास प्रिय हैं। विकास के यज्ञ में हर नागरिक आहुति दे रहा है। मध्यप्रदेश सरकार प्रदेश के प्रत्येक अंचल तक विकास की रोशनी पहुंचाने के लिए संकल्पबद्ध है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दीपावली पर उल्लास का वातावरण है। स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग को प्रदेश में सरकार और समाज ने मिलकर बढ़ावा दिया है। प्रदेश अनेक योजनाओं के क्रियान्वयन में भी देश में प्रथम स्थिति में है। अब हमारी प्रगति की रफ्तार बढ़ने से उत्पन्न उल्लास, पर्व की उमंग और उल्लास को दोगुना कर रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नागरिकों को दीपावली के साथ ही छोटी दीपावली, गोवर्धन पूजा और भाईदूज की बधाई दी है।

उज्जैन में सीएम ने किसानों को बांटे 265 करोड़ रुपए

बोले-कांग्रेसी मोटी चमड़ी के इन्हें समझ नहीं आता, बात सोयाबीन की लेकर गेहूं आ गए

उज्जैन (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव रविवार को उज्जैन जिले की तराना तहसील में अतिवृष्टि से खराब हुई सोयाबीन फसल के लिए किसानों को 265 करोड़ रुपए की राहत राशि वितरित की। यह राशि सिंगल क्लिक के माध्यम से सीधे किसानों के खातों में डाली गई। कार्यक्रम तराना कृषि उपज मंडी में आयोजित हुआ। सीएम ने उज्जैन के तराना में किसानों को राहत राशि वितरण तथा विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन कार्यक्रम को संबोधित किया और कन्या पूजन किया।

सरकार को किसानों की चिंता

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि सरकार ने जन कल्याणकारी योजनाएं लागू की है। फूल स्टाफ बाढ़ का पानी उतरने के बाद ही किसानों को खराब हुई फसलों की राशि दी गई। हमारी सरकार किसानों की प्रतिबद्धता है। किसान बढ़ आंधी तूफान मैं पसीना बहाता है। कभी-कभी परमात्मा परीक्षा लेते हैं और बाढ़ आ जाए तो फसल बिगड़ती है। लेकिन चिंता की बात नहीं किसने की चिंता हमारी सरकार करती है।

कांग्रेसी नेता मोटी चमड़ी के- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राहुल गांधी पर निशाना चाहते हुए कहा कि राहुल गांधी कहते हैं आलू लगाओ तो सोना निकलेगा। लेकिन आज तक सोना नहीं निकला। कांग्रेस के नेता भोपाल में सोयाबीन को लेकर आंदोलन कर रहे थे, लेकिन अपने साथ गेहूं की बोरी ले गए। कांग्रेस नेताओं को सोयाबीन और गेहूं का फर्क भी नहीं मालूम। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के नेता मोटी चमड़ी के हो गए जिन्हें समझ में नहीं आता।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार ने तय किया है जहां भी किसानों को कष्ट हुआ है, फासले बिगड़ी है सरकार ने किसानों के खाते में राहत राशि डाली है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने 47 साल राज किया लेकिन किसान सम्मन निधि आज तक नहीं दी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और हमारी सरकार ने किसानों को सम्मान निधि दी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने लाड़ली बहनों के खातों में राशि डाली। अब जल्दी ही भाई दूज के बाद बहनों को 1500 की राशि दी जाएगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस के लोग कहते हैं बहनों को पैसे मत दो मैं दारु पी जाते हैं। बहनों के लिए इस तरह की बात कहने के कारण ही कांग्रेस की हालत खराब हुई है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के शासन में बिजली के खंभे तो थे लेकिन करंट नहीं था आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल गौर उमा भारती शिवराज सिंह चौहान के प्रयासों से बिजली का कोई संकट प्रदेश में नहीं है।

सरकार सोलर पंप के माध्यम से किसानों का आत्मनिर्भर बनाएगी

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा कि हमारी सरकार ने तय किया है किसानों को सोलर पंप के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाया जाएगा। किसान एक बार सोलर पंप लगवाएंगे बिजली की छुट्टी बिजली के कारण किसानों को परेशान नहीं होना पड़ेगा। अन्य कार्य भी किसान सोलर के माध्यम से पैदा होने वाली बिजली से कर सकेंगे। यदि ज्यादा बिजली उत्पन्न की तो सरकार उनसे बिजली खरीदेगा। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार किसानों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में काम कर रही है।

उन्होंने कहा कि किसान खेती के साथ पशुपालन से भी जुड़े हमें किसानों के आए डबल करना है। किसानों द्वारा 25 लख रुपए की लागत से गाय खरीद कर लाने पर सरकार उन्हें अनुदान देगी। फिर गाय भी किसान की गोबर भी किसान का दूध भी किसान का गाय के गोबर से प्राकृतिक फसल उगाने वाले किसानों को अनुदान दिया जाएगा।

किसानों को करीब 400 करोड़ रुपए की राहत राशि

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि हमारी सरकार जो कहती है वह करती है। दीपावली पर्व के एक दिन पहले आज हमने करीब 400 करोड़ रुपए की राशि किसानों को दी है इनमें 138 करोड़ रुपए की राशि आगर जिले के लिए और 263 करोड़ रुपए की राशि तराना तहसील के किसानों के खाते में सिंगर क्लिक के माध्यम से जारी की गई है। यहीं से आज 29 लाख बहनों को उज्जवला गैस कनेक्शन के लिए 45 करोड़ रुपए की राशि जारी की गई है।

इसके बाद युवाओं के रोजगार के बारे में सोचते हुए सरकार ने तराना कनसिया मैं 8000 करोड़ रुपए से कारखाना लगाने की स्वीकृति दी है। यहां कारखाना लगने के बाद 2 से 3000 लोगों को कम मिलेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि तराना क्षेत्र के लोग अब कांग्रेस वालों से पूछना कितने साल सरकार में रहे उन्होंने क्या दिया।

तराना में आयोजित कार्यक्रम के दौरान जिले के प्रभारी मंत्री गौतम टेटवाल, सांसद अनिल फिरोजिया, विधायक सतीश मालवीय, अनिल जैन कालूखेड़ा, अगर विधायक मधु गहलोत, शाहजहांपुर विधायक अरुण भीमावत, तेज बहादुर सिंह चौहान भी मौजूद थे।

उपमुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने जिला चिकित्सालय अनूपपुर का किया निरीक्षण

भोपाल (नप्र)। उपमुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने जिला चिकित्सालय अनूपपुर का निरीक्षण किया। उन्होंने चिकित्सालय परिसर, विभिन्न वार्डों एवं आपातकालीन सेवाओं की स्थिति का जायजा लिया तथा मरीजों को उपलब्ध कराई जा रही चिकित्सा सुविधाओं की विस्तृत जानकारी प्राप्त की। निरीक्षण के दौरान उपमुख्यमंत्री ने उपस्थित चिकित्सकों एवं अधिकारियों से चर्चा की और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता सुनिश्चित करने पर बल दिया। उपमुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि मरीजों को समय पर, सुरक्षित एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराना शासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि उपचार में किसी भी प्रकार की लापरवाही स्वीकार्य नहीं होगी। चिकित्सालय में स्वच्छता व्यवस्था बनाए रखने, आवश्यक जीवनरक्षक दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने तथा चिकित्सा उपकरणों के सुचारू उपयोग पर विशेष ध्यान देने के निर्देश भी दिए।

उपमुख्यमंत्री ने कहा कि ग्रामीण एवं दूरस्थ अंचलों से आने वाले मरीजों को भी सहज, त्वरित एवं संतोषजनक चिकित्सा सुविधाएँ मिलनी चाहिए। इस दौरान पर मध्यप्रदेश कोल विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री रामलाल रौतेल, कलेक्टर श्री हर्षल पंचोली, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. आर.के. वर्मा, सिविल सर्जन, पूर्व अध्यक्ष जनपद पंचायत पुष्पराजगढ़ श्री हीरा सिंह श्याम सहित अन्य जनप्रतिनिधि, अधिकारी, पत्रकारगण एवं आमजन उपस्थित रहे।

भोपाल से निकला पटाखों का खतरनाक कचरा पीथमपुर भेजेंगे

वायु प्रदूषण रोकने के लिए फव्वारे चालू रहेंगे; फॉगर, जेड स्प्रे मशीनें भी घूमेंगी

भोपाल (नप्र)। दिवाली पर निकलने वाला पटाखों का कचरा धार जिले के पीथमपुर भेजा जाएगा। कंटेनर के जरिए हेजर्डस्ट वेस्ट को नगर निगम की अनुबंधित फर्म पीथमपुर भेजेगी। जहां कचरे को नष्ट किया जाएगा। ऐसा पहली बार होगा, जब कचरा पीथमपुर भेजा जाएगा।

बता दें कि शहर से हर दिन करीब 800 टन कचरा निकलता है। दिवाली के दूसरे दिन 400 टन कचरा अतिरिक्त रहता है, जो पटाखों का होता है। इसे आदमपुर खंती ले जाया जाता है। जहां नष्ट करते हैं, लेकिन इस बार इसे पीथमपुर भेजा जाएगा।

निगम कमिश्नर ने दिए निर्देश- निगम कमिश्नर संस्कृति जैन ने पटाखे के कचरे को पीथमपुर ले जाने को कहा है। हर दिवाली पर पटाखे चलाए जाने से धुआं भी निकलता है। जिससे वायु प्रदूषण भी होता है। पटाखे चलाने के बाद वायु में मिलने वाले बारूद के कणों को जमीन पर लाने के लिए पानी का छिड़काव किया जाएगा। इसके लिए प्रमुख चौराहों पर फागिंग मशीनों, फॉगर, जेड स्प्रे मशीनें घूमेंगी। शहर के सभी फाउंटेन भी चालू रखे जाएंगे।

पहले कचरा ट्रांसफर स्टेशन पर ले जाया जाएगा

दिवाली पर पटाखों के अवशेष स्थल पर ही रह जाते हैं। जिसमें खतरनाक बारूद व अन्य अपशिष्ट (हेजर्डस्ट वेस्ट) प्रबंधन के लिए भी निगम ने व्यवस्थाएं की है। सभी वार्ड क्षेत्रों में हेजर्डस्ट वेस्ट को पृथक से एकत्र कर संबंधित गार्बेज ट्रांसफर स्टेशन पर एकत्र किया जाएगा। ट्रांसफर स्टेशन पर कंटेनर में एकत्र हेजर्डस्ट वेस्ट को निगम की अनुबंधित फर्म द्वारा पीथमपुर भेजा जाएगा।

होटल-रिसार्ट के वाहनों से भी हो सकेगी जंगल सफारी

वन विभाग ने बदले नियम, टाइगर सफारी, अभ्यारण्य में टिकट व्यवस्था में भी हुआ बदलाव

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में टाइगर रिजर्व, नेशनल पार्क और अभ्यारण्य के आस-पास संचालित होटल और रिसॉर्ट संचालक भी अब अपने वाहनों से अपने यहां रुकने वाले पर्यटकों को जंगल सफारी करा सकेंगे। इसके लिए उन्हें पर्यटकों के एंट्री टिकट लेना होंगे और जंगल सफारी के लिए वन विभाग द्वारा अधिकृत निजी वाहनों को तय सफारी शुल्क के 70 प्रतिशत बराबर की राशि जमा करनी होगी। साथ ही उन्हें दस हजार रुपए देकर जंगल सफारी वाले वाहन को गैर रोस्टर रजिस्टर में पंजीयन भी कराना होगा।

दो कैटेगरी में होगी व्यवस्था

प्रदेश में टाइगर रिजर्व और वन्य जीव अभ्यारण्य में पर्यटन के लिए जाने वाले लोग अब वन विभाग की जिप्सी के अलावा स्थानीय होटल संचालकों के वाहनों से भी सफारी का आनंद ले सकेंगे। वन विभाग ने इसको लेकर नियमों में संशोधन कर दिया है। इसके लिए वन विभाग के नियम 34 के उपनियम 7 (3) को विलोपित करते हुए अब संशोधित उपनियम 7 (3) में रजिस्टर्ड वाहनों की दो कैटेगरी तय कर दी गई है। पहली कैटेगरी के वाहन रोस्टर सिस्टम से चलेंगे। रोस्टर सिस्टम संरक्षित क्षेत्र के सक्षम अधिकारी के यहां रजिस्टर्ड पर्यटक वाहन संस्था द्वारा संरक्षित क्षेत्र की स्थानीय परिस्थितियों पर आधारित प्रबंधन द्वारा संचालित होंगे। दूसरी कैटेगरी के वाहन रोस्टर में नहीं रहेंगे। ऐसे वाहन स्थानीय होटल के होंगे और केवल अपने निवासी पर्यटक को लेकर ये वाहन संरक्षित क्षेत्र में प्रवेश कर सकेंगे। इसमें यह व्यवस्था की गई है कि जब दूसरी कैटेगरी वाले ये वाहन संरक्षित वन क्षेत्र में प्रवेश करेंगे तो रोस्टर में आने वाले वाहन को नियम 34 के उपनियम 7 (6) के अनुसार क्षतिपूर्ति प्रदान करेंगे। दोनों ही कैटेगरी के लिए रजिस्टर्ड वाहनों में रोस्टर और गैर रोस्टर साफ तौर पर लिखा जाएगा।

होटल के वाहनों के 10 हजार पंजीयन शुल्क- वन विभाग ने दोनों ही कैटेगरी के वाहनों के लिए पंजीयन शुल्क भी तय कर दिया है। पहली कैटेगरी वाले वाहनों के लिए नियम 34 के उपनियम 7 (8) में बदलाव करते हुए अब इस उपनियम में यह व्यवस्था की गई है कि पहली कैटेगरी यानी रोस्टर वाले वाहनों के लिए पंजीयन शुल्क 2000 रुपए और दूसरी कैटेगरी यानी होटल से आने वाले और गैर रोस्टर वाले वाहनों के लिए पंजीयन शुल्क 10 हजार रुपए प्रति वाहन होगा। यह राशि संरक्षित वन क्षेत्र की पार्क विकास निधि में जमा किया जाएगा। नियमों में यह बदलाव 14 अक्टूबर से लागू कर दिए गए हैं।

जंगल सफाई के लिए टिकट की यह नई व्यवस्था

अब जंगल सफारी के लिए फील्ड डायरेक्टर के 10 प्रतिशत कोटा के अलावा 90 प्रतिशत टिकट दिए जाने को लेकर भी नियम बदले गए हैं। इसमें 70 प्रतिशत टिकट ऑनलाइन दिए जाने का प्रावधान किया गया है जिसमें पूरा सफारी वाहन बुक कराना होगा। 10 प्रतिशत एंट्री टिकट उन लोगों के लिए होंगे जो पूरा सफारी वाहन न बुक कराकर सिर्फ सिंगल सीट लेना चाहते हैं। शेष 10 प्रतिशत सिंगल सीट सफारी के एक दिन पहले दोपहर दो बजे तक ऑनलाइन उपलब्ध रहेगी। उधर एक अन्य नोटिफिकेशन में वन्य प्राणी पर्यटन क्षेत्रों की कैटेगरी से माधव टाइगर रिजर्व, रानी दुर्गावती टाइगर रिजर्व और पद्मश्री डॉ विष्णु श्रीधर वाकणकर टाइगर रिजर्व रातापानी के कोर क्षेत्र के लिए प्रवेश शुल्क तय कर दिया गया है। यह पहले से घोषित टाइगर रिजर्व का आधा होगा।

दीपोत्सव विशेष
रघु ठाकुर
लेखक समाजवादी चिंतक हैं।

ईश्वर व माता-पिता में प्रथम कौन?

ईसाई भाई भी ईसा को ईश्वर का रूप मानते हैं और उनके उन निर्देशों का पालन करते हैं। यहूदी भी अल्लाह को ही मानते हैं हालांकि उनकी कहानी में या किताब में और इस्लाम की मानने वाली किताब में, निर्देशों को मानने का फर्क है और यहां तक भी स्थिति है कि मुसलमान और यहूदी दोनों के ईश्वर के दूतों का स्थान एक ही है, यानि जहां से उनके शास्त्रों के मुताबिक वे अल्लाह के निर्देशों को बताकर वापिस चले गये। बुद्ध धर्म भी धर्म को मानता है हालांकि बौद्ध एक तार्किक धर्म है, जो कहता है कि किसी भी बात को तब तक मत मानो जब तक उसे देख न लो। और यह भी कि अपना रास्ता खुद चुनो (आप्प दीपो भव) अपने दीपक खुद बनो। सिख धर्म भी एक ईश्वर को मानता है और उनकी सीखों को देने के रूप में गुरुनानक को अपना गुरु मानता है। कुल मिलाकर दुनिया की बड़ी आबादी यही मानती है कि कोई ऐसी दैवीय शक्ति जिसे अल्लाह कहें, ईश्वर कहें या गॉड कहो जिसने इस दुनिया को बनाया है। लगभग अधिकांश धर्म विशेषतः हिन्दू, ईसाई और इस्लाम तो यह मानते हैं कि आदमी के अच्छे बुरे कामों का फैसला ईश्वर या अल्लाह करता है। अच्छे काम वालों को स्वर्ग में और बुरे काम वालों को नरक में। इस्लाम के मुताबिक जन्नत और जहन्नूम में भेजा जाता है। बहरहाल कुछ प्रकृति के रहस्य ऐसे हैं जिन्हें व्यक्ति आज तक तार्किक और वैज्ञानिक आधार पर नहीं जान पाया है इसलिए वह यह मानता है कि इस सृष्टि की रचना किसी अनजान, अनदेखी शक्ति ने की है।

सभी धर्मों के शास्त्र यह कहते हैं कि दुनिया को ईश्वर ने बनाया है। धर्म शास्त्रों के स्त्रोत अलग-अलग प्रकार के हो सकते हैं, उनके कहने के तरीके भिन्न हो सकते हैं परंतु सामान्यतरू सभी का निष्कर्ष एक ही रहता है। हिंदू धर्म की मूल कल्पना भी यही है कि ईश्वर या भगवान है जिसने दुनिया को बनाया है, सृष्टि को रचा है। इस्लाम भी अल्लाह को सभी का नियंत्रक मानता है और हजरत मोहम्मद साहब को, अल्लाह के उपदेशों को, निर्देशों को जमीन पर उतारे जाने का वर्णन करता है। यह सही है या गलत इस पर बहस निरर्थक है क्योंकि इस्लाम के करोड़ों अनुयायी इसे ही मानते हैं और इन निर्देशों को अपरिवर्तनीय मानते हैं। ईसाई भाई भी ईसा को ईश्वर का रूप मानते हैं और उनके उन निर्देशों का पालन करते हैं। यहूदी भी अल्लाह को ही मानते हैं हालांकि उनकी कहानी में या किताब में और इस्लाम की मानने वाली किताब में, निर्देशों को मानने का फर्क है और यहां तक भी स्थिति है कि मुसलमान और यहूदी दोनों के ईश्वर के दूतों का स्थान एक ही है, यानि जहां से उनके शास्त्रों के मुताबिक वे अल्लाह के निर्देशों को बताकर वापिस चले गये। बुद्ध धर्म भी धर्म को मानता है हालांकि बौद्ध एक तार्किक धर्म है, जो कहता है कि किसी भी बात को तब तक मत मानो जब तक उसे देख न लो। और यह भी कि अपना रास्ता खुद चुनो (आप्प दीपो भव) अपने दीपक खुद बनो। सिख धर्म भी एक ईश्वर को मानता है और उनकी सीखों को देने के रूप में गुरुनानक को अपना गुरु मानता है। कुल मिलाकर दुनिया की बड़ी आबादी यही मानती है कि कोई ऐसी दैवीय शक्ति जिसे अल्लाह कहें, ईश्वर कहें या गॉड कहो जिसने इस दुनिया को बनाया है। लगभग अधिकांश धर्म विशेषतः हिन्दू, ईसाई और इस्लाम तो यह मानते हैं कि आदमी के अच्छे बुरे कामों का फैसला ईश्वर या अल्लाह करता है। अच्छे काम वालों को स्वर्ग में और बुरे काम वालों को नरक में। इस्लाम के मुताबिक जन्नत और जहन्नूम में भेजा जाता है। बहरहाल कुछ प्रकृति के रहस्य ऐसे हैं जिन्हें व्यक्ति आज तक तार्किक और वैज्ञानिक आधार पर नहीं जान पाया है इसलिए वह यह मानता है कि इस सृष्टि की रचना किसी अनजान, अनदेखी शक्ति ने की है।

दूसरी तरफ हमारे गाँव का किसान और बगीचे का माली होता है जो बीज डालता है, पौधे तैयार करता है। किसान फसल और माली फूल तैयार करता है यानि वह भी सीमित अर्थों में सृजन का काम करता है, परंतु उसके पीछे उसका अपना स्वार्थ भी होता है तथा वह अपने जीवन यापन के लिए जिस फसल को तैयार करता है उसी को काटता है। माली जिस फूल को तैयार करता है उसे ही तोड़ता है। इस्लाम के मानने वाले अल्लाह के हुकुम पर अपनी सबसे प्रिय चीज को कुर्बान करते हैं और बकरीद के पहले महीनों बकरों को खिलाते, पिलाते और घुमाते हैं और बकरीद के दिन उन्हें कुर्बान कर देते हैं। हालांकि इस पर प्रश्न उठता है कि व्यक्ति को बकरा प्यारा है या अपनी संतान और आम आदमी को संतान प्यारी है तो बकरे की कुर्बानी क्यों? इसका एक अर्थ यह भी निकलता है कि इस्लामी दर्शन के उद्घोषकों ने मानवीय कमजोरी को समझा था कि अगर वे अपनी संतान की कुर्बानी का कहेंगे तो इसे कोई स्वीकार नहीं करेगा। दूसरा यह भी है कि उन्होंने इंसान और जानवर के बीच यह फर्क माना है कि अपने लिए इस्तेमाल करना हो तो इसान को मत मारो, पशु वध करो। इस अर्थ में इस्लाम इतना तो अहिंसक है कि वह मानव वध का निर्देश नहीं देता। इसका तीसरा पहलू यह भी है कि अगर अपने पेट और जीभ लिप्सा के लिए पशुवध करना है तो वह साथ में एक ही बार बकरीद को करो बकाया दिन नहीं। यानि मांसाहारी खाना भी साल में एक ही दिन खाना चाहिए। बहुत संभव है कि यह भी निर्देश इसलिए दिया गया हो कि रमजान के माह में एक माह इंसान के खाने के अंतराल में जो लंबी अवधि होती है इससे उसके शरीर में प्रोटीन आदि की कोई कमी आयी हो तो उसे पूरा किया जा सके। परंतु मेरी समझ में मांसाहार की अवधि भी एक निर्धारित अवधि ही है। हालांकि इस तर्क को मुस्लिम भाई शायद ही स्वीकार करें।

तीर्थ सभ्यता और हिंदू धर्म की परंपराओं में भी आरंभिक काल में यज्ञों में पशु बलि दी जाती थी। कितने ही ऐसे मंदिर हैं जिनमें पशु बलि की परंपरा मान्य थी। यहां तक कि कामाख्या देवी के मंदिर मे भी पशु बलि दी जाती थी परंतु कालांतर में कुछ जनमत के दबाव में कुछ परिवर्तन हुआ है और अब पशु बलि को बंद कर दिया गया है। अब आटे आदि के बनाये हुये पशु की पशुबलि दी जाती है। जैसे भी हो यह कुछ तो सुधार है कि किसी प्रकार पशु बलि या नर बलि रोक दी गई।

मैं मानता हूं कि, एक जमाने में रेगिस्तान के इलाकों में चूंकि अनाजों की पैदावार कम थी अतरू वहां मांसाहार जरूरी रहा होगा। ठंडे मुल्कों में भी शायद उनकी शारीरिक जरूरतों के लिए मांसाहार जरूरी होगा। राहुल साकृत्यान ने तो अपने अनुभवों में भी लिखा ही है कि बद्रीनाथ, केदारनाथ के मठों में भी बर्फ गिरने के बाद सूखा मांस ही रखा जाता था और उसका प्रयोग होता था। उस जमाने में शरीर को गर्म रखने के लिए वह सब साधन नहीं होते थे जो आज उपलब्ध है। बिजली नहीं थी और कृत्रिम तापमान बढ़ाने के साधन नहीं थे। मांसाहार शायद उनकी मजबूरी रही हो। यह मांसाहार किसी जाति से संबंध नहीं रखता था। यह मांसाहार उस भीषण सर्दी में आम जरूरत थी। समय के अनुकूल परंपराओं में चाहे वह धार्मिक हो या सामाजिक बदलना चाहिए। यह भी बदलाव का एक हिस्सा है।

माली और किसान के बारे में तो मैंने पहले ही लिखा है कि वे फसल को तैयार ही अपने जीवन यापन के लिए करते हैं। इसलिए यह स्वाभाविक है कि वे फसल को तैयार करेंगे और काटेंगे। यह सब लिखने का प्रसंग इसलिए हुआ कि एक मित्र ने मुझसे प्रश्न पूछा था कि ईश्वर और माता-पिता में कौन सबसे बड़ा है और मैं किसे श्रेष्ठ मानता हूं। वे ईश्वरवादी थे परंतु मेरे उत्तर से उन्हें कुछ दुख पहुंचा। दुख स्वाभाविक भी था क्योंकि मैंने उनसे कहा कि मेरी नजरों में और मेरे तर्कों के आधार पर मेरे माता-पिता उनकी ईश्वर की कल्पना से भी बड़े नजर आते हैं। ईश्वर जैसे कि कहा जाता है कि ईश्वर ने सृष्टि की रचना की। इस रचना का उद्देश्य स्पष्ट नहीं। यह रचना करने में ईश्वर की क्या लाचारी थी। इस पर दुनिया का कोई भी ग्रंथ प्रकाश नहीं डालता। दूसरे ईश्वर ने सृष्टि की रचना की, मानव को पैदा किया। उसके लिए अपनी रक्षा, विकास, ज्ञान, जीवन मूल्य, सत्य-असत्य आदि के लिए कोई ईश्वरीय सुरक्षा ऐसी नहीं दी जो प्रकट रूप में नजर आती हो। व्यक्ति बीमार हो तो उसे ईलाज के लिए वैद्य, हकीम या चिकित्सक दवा देगा और वह उसका मूल्य लेगा। कम ले, ज्यादा ले, सही या गलत ले इस पर अलग-अलग नजीर हो सकती हैं। इंसान अच्छे और बुरे हो सकते हैं। अंत में यह व्यक्ति की आर्थिक क्षमता पर भी निर्भर करता है। अगर ईश्वर या अल्लाह बुरे व्यक्ति को दंड दे रहा है, वह उसे दुबारा जन्म देता ही क्यों है? समाज के लिए कांटे बोने की आवश्यकता ही क्यों है? कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनके उत्तर धर्म, समाज के पास आज नहीं हैं और अगर आज हैं भी तो वे तर्क के पाये पर कम खड़े होते हैं। मैंने माता-पिता को सबसे ऊपर इसलिए माना है कि वे ना केवल बच्चे की रचना करते हैं, वो चाहकर करें चाहे ना चाहकर करें, जाने अनजाने करें पर रचना का माध्यम वही हैं। परंतु रचना या जन्म देने के बाद वे उसके सारे भौतिक और जीवन के दायित्व भी निभाते हैं। बच्चे का पालन-पोषण, रक्षण, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार और यहां तक कि खुद उम्रदराज होने के बावजूद भी फिर बच्चों के बच्चे के प्रति भी, कुछ अपवाद छोड़कर उनका त्याग और समर्पण अतुलनीय होता है। माता-पिता तो अपने कृति के प्रति इतने स्नेहील होते हैं कि अगर अपनी जान देकर भी उनकी जान बच जाये तो बचाने को तैयार होते हैं।

तो परंतु, जब आजकल अखबारों में, हर दिन ऐसी खबरें मैं पढ़ता हूं कि वृद्धजनों, अनाथालयों की संख्या देश और दुनिया में बढ़ रही हैं, इसके बावजूद भी वे जरूरत से अधिक भरे पड़े हैं। सारे ऐसे उदाहरण भी अखबारों में आये दिन छपते हैं कि अच्छा खासा वेतन पाने या कमाने वाले बच्चे अपनी सुख-सुविधा या भोग के लिए माता-पिता को घर से निकाल देते हैं, भीख मांगने को लाचार करते हैं। उन्हें वृद्धाश्रम, अनाथालयों या विधवा आश्रमों में छोड़ आते हैं, उन्हें भीख मांगने के लिए सड़कों पर छोड़ देते हैं। ये वृद्धजन भीख मांगकर जो पैसा जमा करते हैं और अपनी संतानों के लिये दे देते हैं। आजकल तो कुछ ऐसे ही घृणित अपराध मीडिया के माध्यम से सामने आ रहे हैं जो संतानें जिनके माता-पिता ने उन्हें जन्म दिया वे ही अपने माता-पिता के लिए शराब या नशे के लिए पैसा ना देने पर जान से मार देते हैं। ईश्वर से तो व्यक्ति कुछ डरता भी है, भले ही वह पुलिस से ज्यादा या ईश्वर से कम डरता हो, पर डरता है। माता-पिता की हत्या करते हुए भी, उन्हें सड़कों पर भीख माँगने के लिए लाचार करते हुए भी उन्हें पैसों के लिए मारपीट करते हुए भी, उन्हें कोई अपराध बोध नहीं होता। मैं नहीं समझ पाता कि ईश्वर ऐसे लोगों को क्यों पैदा करता है। अतरू मेरा निष्कर्ष यही है कि ईश्वर, किसान, माली और माता-पिता में कौन प्रथम हैं, मैं तो माता-पिता को ही मानूँगा। यहां मैं पंढरपुर के विठ्ठल मंदिर की कथा बताना चाहूंगा। वहां विठ्ठल भगवान की प्रतिदिन प्रार्थना पुंडलिक करते थे। एक दिन भगवान प्रकट हो गए उस समय पुंडलिक अपने पिता के पैर दबा रहे थे। उन्होंने एक ईंट रखकर भगवान से कहा कि आप प्रतीक्षा करें, मैं अभी पिताजी की सेवा कर रहा हूँ। आज भी विठ्ठल मंदिर में श्री कृष्ण ईंट पर खड़े हुए हैं। आईये इस दीपावली पर अपने माता-पिता के सम्मान के प्रति संकल्प लें।

दिवाली पर विशेष
अतुल गोयल
लेखक न्यूयॉर्क की कंपनी में सॉफ्टवेयर डवलपमेंट इंजीनियर हैं!

धन की देवी नहीं, धर्म की धारक हैं मां लक्ष्मी

भारतीय संस्कृति में दिवाली केवल दीपों और उत्सव का पर्व नहीं बल्कि सृष्टि के उस सनातन भाव का प्रतीक है, जिसमें प्रकाश अंधकार पर, श्रद्धा मोह पर और सृजन विनाश पर विजय प्राप्त करती है। इस दिन जब संपूर्ण भारत दीपों से जगमगा उठता है, तब हर घर, हर हृदय में देवी लक्ष्मी के स्वागत की मंगल भावना जाग उठती है। भारतीय जीवन में धन, सुख, समृद्धि और ऐश्वर्य का जो दार्शनिक अर्थ है, वह मात्र भौतिक नहीं बल्कि आध्यात्मिक है और इसी का साक्षात् प्रतीक हैं देवी लक्ष्मी।

प्राचीन ग्रंथों में उल्लेख मिलता है कि लक्ष्मी केवल धन की अधिष्ठात्री नहीं, शरीर की 'रोग निरोधक शक्ति' के रूप में भी पूजनीय हैं। वह मानव शरीर की समग्र ऊर्जा हैं, जो जीवन को स्वस्थ, संतुलित और कर्मशील बनाती है। वे उस चेतना की अधिष्ठात्री हैं, जो मनुष्य को भोग के साथ त्याग की मर्यादा भी सिखाती है। लक्ष्मी को 'चंचला' कहा गया है क्योंकि वह कभी स्थिर नहीं रहती, वह केवल उसी स्थान पर ठहरती हैं, जहां श्रम, सच्चाई, श्रद्धा और सद्कर्मों का संगम होता है। भारतीय जनमानस में यह दृढ़ विश्वास है कि जो धन को केवल भोग का साधन मानता है, वह अंततः विनाश की ओर बढ़ता है पर जो उसे ईश्वरीय प्रसाद मानकर सद्कार्यों में उपयोग करता है, वह न केवल स्वयं का कल्याण करता है बल्कि समस्त सृष्टि में मंगल का कारण बनता है। लक्ष्मी पूजन की परंपरा और उनकी पूजा के पीछे अनेक पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं, जिनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध कथा महर्षि दुर्वासा से जुड़ी है। कथा के अनुसार, एक दिन महर्षि दुर्वासा हिमालय की घाटियों में भ्रमण कर रहे थे। उस वन में सुगंधित पुष्पों की अनगिनत कलियां खिली थी और एक देवसुंदरी अपने हाथों में कमल पुष्पों की एक अनुपम माला लिए खड़ी थी। माला की सुगंध से मुग्ध होकर दुर्वासा ऋषि ने उस सुंदरी से वह माला मांग ली। सुंदरी ने विनम्रतापूर्वक उन्हें माला अर्पित कर दी। चलते-चलते जब ऋषि दुर्वासा ने आगे ऐरावत हाथी पर सवार देवराज इन्द्र को देखा तो उन्होंने वह पुष्पमाला उनकी ओर उछाल दी।

देवराज इन्द्र ने बिना विचार किए माला अपने हाथी ऐरावत के मस्तक पर रख दी। ऐरावत ने माला को सूंड से झटक दिया और वह भूमि पर गिर पड़ी। दुर्वासा ऋषि के लिए यह अपमान असहनीय था। उन्होंने क्रोधित होकर इन्द्र को श्राप दिया, 'हे इन्द्र, जिस मस्तक पर यह पवित्र माला रखी गई है, वही प्रथम पूजा का अधिकारी होगा और देवी लक्ष्मी भी तुझे छोड़कर चली जाएगी।' दुर्वासा के श्राप से इन्द्र का तेज लुप्त हो गया। देवताओं की शक्तियां क्षीण पड़ गईं और सम्पूर्ण देवलोक में दरिद्रता का अंधकार छा गया। व्याकुल इन्द्र ब्रह्मा के पास पहुंचे, जिन्होंने उन्हें साथ लेकर भगवान विष्णु के समक्ष निवेदन किया। विष्णु ने कहा, 'मैं और लक्ष्मी, दोनों उस स्थान पर निवास नहीं करते, जहां भक्त का अपमान होता है।' उन्होंने देवताओं को समुद्र मंथन करने का आदेश दिया ताकि लक्ष्मी पुनः प्रकट होकर सृष्टि में संतुलन स्थापित कर सकें।

तब देवताओं ने वासुकी नाग को रस्सी और मंदराचल पर्वत को मंथनी बनाकर समुद्र मंथन प्रारंभ किया। भगवान विष्णु स्वयं कच्छप अवतार लेकर मंदराचल को अपनी पीठ पर धारण कर समुद्र के गर्भ में स्थित हुए। समुद्र के मंथन से सबसे पहले 'कालकूट विष' प्रकट हुआ, जिसका प्रभाव इतना प्रचंड था कि संपूर्ण सृष्टि विनाश के कगार पर पहुंच गई। तब भगवान शिव ने करुणा से प्रेरित होकर उस विष का पान किया और संसार की रक्षा की। इसके पश्चात एक-एक कर चौदह अमूल्य रत्न प्रकट हुए, जिन्हें 'चौदह रत्न' कहा गया। इन रत्नों में दिव्य औषधियां, कामधेनु, पारिजात वृक्ष, अप्सराएं, ऐरावत, कौस्तुभ मणि, चंद्रमा, धन्वंतरि और अंत में लक्ष्मी जी का प्राकट्य हुआ। जब लक्ष्मी जी क्षीरसागर की उज्ज्वल लहरों से प्रकट हुई, तब समस्त दिशाएं उनके दिव्य रूप से आलोकित हो उठी। वे कमलासन पर विराजमान थी, उनके नेत्रों में करुणा थी और मुख पर दिव्यता का अपूर्व तेज। उनके प्रकट होते ही देवगण उल्लासित हो उठे। देवताओं ने उन्हें विविध आभूषणों, रत्नों और पुष्पमालाओं से विभूषित किया और उनका स्वागत किया। लक्ष्मी का यह प्राकट्य मात्र सौंदर्य का नहीं बल्कि सृष्टि में समृद्धि, स्वास्थ्य, सद्भाव और संतुलन की पुनः स्थापना का प्रतीक था। तभी से लक्ष्मी जी को धन, ऐश्वर्य और समृद्धि की देवी के रूप में पूजा जाने लगा। उन्हें 'विष्णुप्रिया' कहा गया क्योंकि समुद्र मंथन से प्रकट होने के पश्चात उन्होंने भगवान विष्णु का वरण किया और सृष्टि संचालन में सहचर बनी। दीवाली की रात्रि, जब अमावस्या का अंधकार चारों ओर फैला होता है, तब दीपों की पंक्तियां उस अंधकार को चीरते हुए लक्ष्मी के आगमन का प्रतीक बनती हैं। इस दिन लोग अपने घरों की सफाई करते हैं, उन्हें दीपों से सजाते हैं और दरवाजों पर रंगोली बनाते हैं ताकि लक्ष्मी का स्वागत हो सके। प्रतीकात्मक रूप से यह आत्मशुद्धि, सकारात्मक ऊर्जा और आध्यात्मिक समृद्धि का प्रतीक है। कथाओं के अनुसार, दीवाली के दिन देवी लक्ष्मी के साथ अन्य देवी-देवताओं की भी पूजा की जाती है। जब महर्षि और मुनियों ने सनतकुमार से पूछा कि लक्ष्मी के साथ अन्य देवताओं की पूजा क्यों की जाती है तो उन्होंने कहा, 'एक समय राजा बलि ने लक्ष्मी सहित समस्त देवताओं को अपने अधीन कर लिया था। भगवान विष्णु ने स्वयं वामन रूप धारण कर बलि को पराजित किया और लक्ष्मी सहित सभी देवताओं को दीपावली के दिन बंधन से मुक्त कराया। इसीलिए इस दिन केवल लक्ष्मी ही नहीं, समस्त देवताओं की आराधना की जाती है ताकि वे हमारे जीवन में पुनः वास करें और उनकी कृपा से हमारा मार्ग प्रकाशित हो।'

लक्ष्मी पूजन का अर्थ केवल धन की याचना नहीं बल्कि मन की पवित्रता और कर्म की शुद्धता की साधना है। दीवाली के दिन लक्ष्मी की पूजा करके हम उस शक्ति का आह्वान करते हैं, जो जीवन में संतुलन, सौंदर्य और संपन्नता लाती है। दीपक की लौ की तरह लक्ष्मी भी तब तक स्थिर रहती हैं, जब तक हमारे मन का वात सच्चाई, ईमानदारी और करुणा से संतुलित रहता है। भारतीय संस्कृति में लक्ष्मी का आगमन केवल भौतिक धन से नहीं, आत्मिक संपन्नता से भी जोड़ा गया है। वे केवल स्वर्ण और रत्नों की देवी नहीं बल्कि संतोष, स्वास्थ्य, सौहार्द्र और सद्बुद्धि की प्रतीक हैं। लक्ष्मी पूजन का वास्तविक संदेश यह है कि समृद्धि तभी सार्थक है, जब उसमें परोपकार का भाव हो, जब धन का प्रवाह धर्म और समाज हित के लिए हो।

दीवाली की रात जब दीपक जलते हैं तो यह केवल अंधकार मिटाने का प्रतीक नहीं बल्कि उस विश्वास का उद्घोष है कि मनुष्य के भीतर की आलोक शक्ति हर प्रकार की नकारात्मकता को परास्त कर सकती है। जब घर-घर में लक्ष्मी का आह्वान होता है तो वह केवल आर्थिक संपन्नता नहीं, नैतिक और आध्यात्मिक विकास का भी प्रतीक बन जाती हैं। दीवाली की रात्रि में लक्ष्मी पूजन एक अनुष्ठान नहीं बल्कि आत्मचेतना का उत्सव है। सच्ची लक्ष्मी उस हृदय में वास करती हैं, जहां श्रद्धा और सादगी हो, जहां श्रम का सम्मान और करुणा का भाव जीवित हो। दीपों की यह उजास केवल बाहर की नहीं, भीतर की भी ज्योति है, जो संदेश देती है कि जहां प्रकाश है, वहां लक्ष्मी का वास अवश्य है।

अमावस के अंधेरे में इन्द्रधनुषी रंगों की बहारें

दिवाली विशेष
डॉ.मुरलीधर चाँदनीवाला

जीवन में दुःख नहीं आते, निराशा के घने बादल आकर अपना डेरा नहीं जमाते, अवसाद को आमंत्रण देने वाली परिस्थितियाँ झकझोर नहीं देतीं और इस जीवन को बार-बार नीरस बनाकर कोई हमें लड़ने की चुनौतियाँ नहीं दे रहा होता तो यकीन मानिए, न ये तीज-त्यौहार होते और न इन्हें साल दर साल मनाते चले जाने की जद्दोजहद होती। छोटे-बड़े सब त्यौहारों की उपज दुख के पहाड़ों को चीरने के लिये ही हुई है। यह भारतीय दृष्टिकोण है कि हम अपना सबसे बड़ा त्यौहार उस तिथि को मनाते हैं, जिसे अनिष्टकारक माना गया, अशुभ माना गया, भय का उत्पादक माना गया।

भारतीय मनीषियों का चिन्तन रहस्य की कई परतों से ढँका हुआ है। मनीषियों ने हमें तर्कजाल में नहीं उलझाया। वे हमें ऐसी व्यवस्था सौंप गये, जो धर्मसम्मत है, और सब दुःख भूलकर हमें पल-पल उत्सव के रंगों में डूबते रहने के लिये तैयार करती है। लोकमानस कभी इस पर नहीं जाता कि होली क्यों मनाई जाती है? या रक्षाबंधन क्यों आता है? जो कथाएँ रच दी गई हैं, वही ठीक हैं। वे कथाएँ न होतीं, तब भी हम त्यौहार इसी तरह मना रहे होते, क्योंकि हमारे पुरखे ये तीज-त्यौहार विरासत में छोड़ गये हैं। हम इसी तरह मिलते-जुलते और अपने जीवन में रंग भरते।

किसी घर में मृत्यु आई हो, तो देखिए उस घर में पहली होली और पहली दिवाली आकर एक नई इबारत लिख जाती है। श्राद्ध पक्ष को शुभ-अशुभ मान लेना तो एक बात हो सकती है, लेकिन उन दिनों सांझ-सबेरे कुवाँरी कन्याओं का इकट्ठा होना, संझा माँडना, संझा के गीत गाना लोक जीवन में कैसा चाव पैदा करता है। गुजरे जमाने में तो इतनी बंदिशें थीं कि रक्षाबंधन न आये, तो बेटियों को बाबुल के आँगन में चहकने का मौका भी न मिले। इसीलिए हम नहीं पूछते कि आखिर क्यों आता है करवा चौथ? क्यों आती है धनतेरस?

महाकवि जयशंकर प्रसाद ने ठीक ही लिखा है-'इस नील विषाद गगन में, सुख चपला सा दुःख घन में।' जीवन का समूचा संघर्ष उस थोड़े से सुख के लिये है। वह थोड़ा सा सुख मिल जाये, तो व्यक्ति बड़े से बड़ा दुःख भूल जाता है। महाकवि कालिदास ने भी हमें यही सिखाया कि सुख हो या दुःख, वह हमेशा बना नहीं रहता। एक चक्र चलता है, कभी सुख ऊपर और दुःख नीचे तो कभी दुःख ऊपर और सुख नीचे। इसीलिए सच्चा भारतीय वही है, जो किसी बात का रोना नहीं रोता। वह हर हाल में मुस्कुराता है, रंगोली सजाता है, जीवन के गीत गाता है।

दिवाली आई है, तो अमावस का वह अंधेरा लेकर नहीं, जिसे आप मिट्टी के दीये जलाकर जीत लेंगे। अब दिवाली यह संदेश लेकर आती है कि धन-सम्पदा के पीछे भागते रहोगे, तो पूरी शानो-शौकत में भी अकेले और पूरी तरह से खाली ही रहोगे। इस बार आह्वान करो प्रेम और सामंजस्य की लक्ष्मी का, एकता और अखंडता की लक्ष्मी का। इस बार कहो कि हे महालक्ष्मी ! मनुष्यता दे, एक-दूसरे को सहन करने और साथ निभाने की शक्ति दे। ऐसा वरदान दे कि हम सब मिल-जुलकर शान्ति से रह सकें। सभी के घरों में चैन हो, सबके घरों में आराम हो, सेहत हो, धन-धान्य हो। हम दुःखी तो हैं, फिर भी किसी ललित स्वर में कोई राग अलापना चाहते हैं। हम चारों तरफ से आपदा में घिरे हैं, फिर भी सब मिलकर थिरकना चाहते हैं। बीच रास्ते में हमारा कोई अपना बिछुड़ गया है, लेकिन उसकी यादों की शाम बाँसुरी बजाना चाहते हैं। कुछ छीन लिया गया है हमसे, जो वापस नहीं मिल सकता, लेकिन हम मिलकर आशाओं की नई फसल उगाना चाहते हैं। इतिहास पर नजर डालें, तो पायेंगे कि किसीने हमारी बैसाखी तोड़ दी, किसीने हमारे आँसू सुखा दिये, किसीने हमारे अरमानों को कुचल दिया, लेकिन हम भारत की संतान कभी पराजय स्वीकार नहीं करती। हम फिर उत्साह और उमंग से भर लेंगे अपना हृदय, और आँगन में फिर से स्नेह के दीप जलायेंगे, मिठाइयाँ बाँटेंगे। गायेंगे, नाचेंगे, झूम उठेंगे।

यह भारत भूमि सम्पूर्ण विश्व का तीर्थस्थल है। यहाँ हर पल मेला, हर पल आनंद का मौका तलाश ही लिया जाता है। दुःख के बड़े से बड़े पहाड़ को मसल कर रख देने की अद्भुत क्षमता हम भारतवासियों में है। हम इस धरती के जाये हैं, और इसकी ममता में बँधे हुए हैं। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने गीतांजलि में गाया है-'दुर्लभ एक धरणीर लेशतम स्थान, दुर्लभ एक जगतीर व्यर्थतम प्राण।' इस धरती का छोटे से छोटे स्थान भी दुर्लभ है, इस दुनिया का व्यर्थ से व्यर्थ जीवन भी दुर्लभ है। इसलिए हम धरती पर होने का उत्सव मनाते हैं। दिवाली इसी उत्सव का नाम है। यह निर्धन और निरुपाय व्यक्ति में भी उत्साह भर देता है, यह गहन अंधेरे में भी उजाले की गहरी छाप छोड़ जाता है। इस बार भी दिवाली की शाम घर पर रिश्तों की मिठास घुलेगी ही। बच्चों के भीतर उतर आया सूनापन छँट जायेगा। दोस्तों की महफिल में मोहब्बत के नये रंग भरने आई है दिवाली। इस बार नये युग की नयी लक्ष्मी के पाँव पड़ रहे हैं। यह लक्ष्मी भौतिक वस्तुओं की चकाचौंध से बाहर निकल आई है और आमंत्रण दे रही है कि भारतीय संस्कृति के ध्वजवाहको ! उठो। मृत्यु के चिन्तन को परास्त करो, निराशा के अंधेरे से बाहर निकल आओ और जीवन के सत्य से पहचान कर लो। महालक्ष्मी हर एक को नया जीवन लक्ष्य देने आ रही है और उस लक्ष्य को साधने के लिये वह नये संसाधन भी ला रही है। अब चिन्ता नहीं। हम फिर शुरू से शुरू करेंगे। नई धुन तैयार करेंगे। अपनी साँसों को नई लय देंगे। शुभकामनाओं की फुलझड़ियों के बीच जब आत्मविश्वास का अनार फूटेगा, तब अमावस के अंधेरे में इन्द्रधनुषी रंगों की बहारें गुनगुनायेंगी-'तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय।'

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

दीप पर्व विशेष
विवेक कुमार मिश्र
लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

दीपावली मानव मन को शुभता से जोड़ने का पर्व

अंधकार कितना भी घना क्यों न हो, अमावस की काली रात कितनी भी गहरी क्यों न हो... सामने तूफान ही क्यों न हो मानवीय संकल्प का प्रतीक दीया जलता ही रहता है । माटी का एक दीया उजास और उल्लास के लिए काफी होता है। माटी का दीया जन जन की आकांक्षा का प्रतीक है । घने अंधकार में जब कुछ भी नहीं सूझता तो पृथ्वी की शक्तियां दीया जलाती हैं। आकाश अंधकार उगल रहा होता है और पृथ्वी पर मनुष्य की मंगल कामना का दीप ऐसे जलता है कि चारों तरफ जगमग दीप जल उठते हैं। सारा अंधेरा छंट जाता है। प्राकृतिक अंधेरा हो या मानव निर्मित अंधेरा मानव मन के दीप जल उठते हैं अंधेरे के विरुद्ध दीपपर्व हमें अंधेरे के विरुद्ध खड़े होने की शक्ति देता है। मानव मन दीपपर्व के साथ प्रकाशित हो उठता है। पृथ्वी पर इस छोर से उस छोर तक दीपमालाएं ही दिखती हैं। असंख्य दीप जब एक साथ जल उठते हैं तो उनका उजास आकाश से भी ऊंचा उठने लगता है। दीपावली का दीया हर घर को प्रकाशित करने की कामना लेकर आता है। इस पर्व की प्रतीक्षा पूरे साल रहती है, झोपड़ी हो या महल सबसे पहले घर की साज संवार बढ़ जाती है, सब चीजें नये सिरे से नये रंग में सज जाती हैं। यह पर्व अपने साथ सफाई को लेकर आता है। बच्चे बड़े बुजुर्ग सब इस पर्व के साथ ही अपने भीतर एक उल्लास महसूस करते हैं। अंदर से बाहर तक साफ-सफाई शुरु हो जाती है। उल्लास ऐसा की गली मुहल्लों से लेकर पूरे गांव में सब एक दूसरे के साथ सफाई रंग रोगन और साज सज्जा को देखने के लिए निकल जाते हैं । मन का दीया अंधेरे के विरुद्ध जलता ही रहता है। दीपमालाओं के साथ आसमान से तारे भी दीये की रोशनी के रूप में पृथ्वी पर आ जाते हैं। दीये की रोशनी में पूरा संसार ही चमक उठता है। जगमग दीपमालाओं के संग आदमी एक नये संकल्प लेकर जीवन पथ पर आगे बढ़ जाता है। दीपावली का शुभत्व मानव मन में प्रकाश का ऐसा आख्यान रचता है कि आदमी कुछ भी कर सकता है।

कुछ करने के लिए कुछ नया रचने के लिए कहीं दूर नहीं अपने मन को प्रकाशित करने की जरूरत है। मन का दीया सिर चढ़कर बोलता है। मन के दीये को जलाने के लिए साधन की नहीं संकल्प की जरूरत होती है। मनुष्य की रचनात्मक शक्ति ही मन का दीया जलाती है, इसी दीये के प्रकाश में वह कुछ भी कर सकती है। मनुष्य के साहस और संकल्प से बढ़कर कुछ और नहीं है। मनुष्य की इन्हीं शक्तियों को संजोकर शुभ दीपावली का दीया सबसे यहीं कहता चलता है कि रुकों मत आगे बढ़ो, जीवन पथ पर चलना ही मूल्य है। दीया के प्रकाश के साथ ही आत्मशक्ति का उजाला ऐसे चल पड़ता है कि आदमी कुछ भी कर सकता है। यह सब संभव है जब आप अपने भीतर के दीये को जलाना सीख जाते हैं। यह वहीं दीपक है जिसे मानव संकल्प ने रचा है । इसी आत्म संकल्प से मनुष्य अपनी दुनिया को बदलने में समर्थ होता है। हर दीया मानव मन के प्रकाश को पृथ्वी से लेकर आसमान तक एक साथ जोड़ने की शक्ति रखता है। शुभ दीपावली मानव मन को शुभता से जोड़ने का पर्व है।

दीपावली विशेष

देशना जैन

समृद्ध राष्ट्र की कहानी कहते भारत के लक्ष्मी मंदिर

हिंदू धर्म में लक्ष्मी को विष्णु की अर्धांगिनी के रूप में पूजा जाता है, और ये मंदिर उनकी विभिन्न रूपों—जैसे महालक्ष्मी, पद्मावती, गजलक्ष्मी, अष्टलक्ष्मी आदि को समर्पित हैं। भारत के विभिन्न कोनों में फैले ये मंदिर, दक्षिण से उत्तर तक, द्रविड़, नागर और चालुक्य शैलियों का प्रदर्शन करते हैं। इनकी स्थापना प्राचीन काल से चली आ रही है, जहां राजाओं, संतों और भक्तों ने इन्हें समृद्ध किया। दिवाली और नवरात्रि जैसे त्योहारों पर ये मंदिर भक्तों से पट जाते हैं, जहां प्रार्थना और उत्सव एक साथ फलते-फूलते हैं।

भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत में लक्ष्मी मंदिरों का विशेष स्थान है। देवी लक्ष्मी, जो समृद्धि, धन, सौभाग्य और शक्ति की प्रतीक हैं, के ये मंदिर न केवल धार्मिक केंद्र हैं, बल्कि स्थापत्य कला के उत्कृष्ट नमूने भी हैं। हिंदू धर्म में लक्ष्मी को विष्णु की अर्धांगिनी के रूप में पूजा जाता है, और ये मंदिर उनकी विभिन्न रूपों–जैसे महालक्ष्मी, पद्मावती, गजलक्ष्मी, अष्टलक्ष्मी आदि–को समर्पित हैं। भारत के विभिन्न कोनों में फैले ये मंदिर, दक्षिण से उत्तर तक, द्रविड़, नागर और चालुक्य शैलियों का प्रदर्शन करते हैं। इनकी स्थापना प्राचीन काल से चली आ रही है, जहां राजाओं, संतों और भक्तों ने इन्हें समृद्ध किया। दिवाली और नवरात्रि जैसे त्योहारों पर ये मंदिर भक्तों से पट जाते हैं, जहां प्रार्थना और उत्सव एक साथ फलते-फूलते हैं। ये मंदिर न केवल आध्यात्मिक शांति प्रदान करते हैं, बल्कि सामाजिक एकता और सांस्कृतिक संरक्षण का प्रतीक भी हैं। ये मंदिर समृद्ध राष्ट्र की कहानी कहते है और हमें भारतीय संस्कृति की विविधता और दिव्य ऊर्जा से परिचित कराते हैं, जहां प्रत्येक पत्थर में भक्ति की गूंज सुनाई देती है।

महालक्ष्मी मंदिर, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

कोल्हापुर का महालक्ष्मी मंदिर, जिसे अंबाबाई मंदिर भी कहा जाता है, भारत के प्रमुख शक्ति पीठों में से एक है। कहा जाता है कि 7वीं शताब्दी में चालुक्य राजा कर्णदेव ने इसका निर्माण कराया, और बाद में शिलाहार राजा भोज द्वितीय ने इसका पुनर्निर्माण किया। देवी यहां महालक्ष्मी के रूप में विराजमान हैं – एक ऐसी माता जो केवल धन ही नहीं, बल्कि शक्ति और करुणा का भी आशीर्वाद देती हैं। काले पत्थरों से बना यह मंदिर हेमाडपंथी शैली का अद्भुत उदाहरण है। इसकी नक्काशियों में देवत्व की झलक मिलती है। पश्चिममुखी देवी की मूर्ति दुर्लभ है, जो 'त्वरित वरदान' का प्रतीक मानी जाती है। नवरात्रि और किरणोत्सव के समय मंदिर में श्रद्धालुओं की अपार भीड़ उमड़ती है। कोल्हापुर का यह धाम आज भी भक्तों को आत्मविश्वास और समृद्धि की अनुभूति कराता है।

श्रीपुरम गोल्डन लक्ष्मी मंदिर, वेल्लोर (तमिलनाडु)

अगर स्वर्ण की चमक और भक्ति का मिलन देखना हो, तो वेल्लोर का श्रीपुरम लक्ष्मी नारायणी मंदिर जाना चाहिए। 2007 में बना यह मंदिर लगभग 1500 किलो सोने से मढ़ा गया है, जो इसे विश्व का सबसे बड़ा स्वर्ण मंदिर बनाता है। 40 एकड़ में फैला यह मंदिर 'श्री चक्र' के आकार में बना है, जहां भक्तों को स्वर्णजटित मूर्तियों और उद्यानों के बीच आत्मिक शांति का अनुभव होता है। यहां की लक्ष्मी नारायणी की मूर्ति न केवल दर्शनीय है, बल्कि श्रद्धा का केंद्र भी। यह मंदिर सोने की आभा से नहीं, बल्कि भक्तों की आस्था से भी जगमगाता है। यह आधुनिक भारत में भी आध्यात्मिकता की शक्ति का प्रमाण है।

पद्मावती मंदिर, तिरुचानूर (आंध्र प्रदेश)

तिरुपति की यात्रा तब तक अधूरी मानी जाती है जब तक भक्त देवी पद्मावती के दर्शन न कर लें। कमल से उत्पन्न पद्मावती लक्ष्मी का ही अवतार मानी जाती हैं, जिनका विवाह स्वयं भगवान वेंकटेश्वर से हुआ था। यह मंदिर द्रविड़ शैली में बना है और इसका ऊंचा गोपुरम दूर से ही भक्तों को आकर्षित करता है। यहां की पद्मावती की स्वर्ण मूर्ति और परिसर का शांत वातावरण एक अलौकिक अनुभव देता है। तिरुपति से मात्र पाँच किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह स्थान वैवाहिक सुख और समृद्धि का आशीर्वाद पाने वालों के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है।

अष्टलक्ष्मी मंदिर, चेन्नई (तमिलनाडु)

चेन्नई का बेसेंट नगर समुद्र तट न केवल सुंदर दृश्य के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि यहां स्थित अष्टलक्ष्मी मंदिर भी अद्भुत है। यह मंदिर देवी लक्ष्मी के आठ रूपों – धन, संतति, विजया, धैर्य, गज, विद्य, धान्य और ऐश्वर्य – को समर्पित है। समुद्र की लहरों के साथ जब आरती की ध्वनि गूंजती है, तो वातावरण में अपार सकारात्मक ऊर्जा फैल जाती है। यह मंदिर केवल भक्ति का स्थल नहीं, बल्कि जीवन के आठ मूल्यों की स्मृति दिलाता है।

महालक्ष्मी मंदिर, मुंबई (महाराष्ट्र)

मुंबई का महालक्ष्मी मंदिर अरब सागर के किनारे स्थित है, और शहर के व्यस्त जीवन में यह स्थान भक्ति की शरणस्थली जैसा है। कहा जाता है कि जब ब्रिटिश काल में समुद्र से तीन मूर्तियाँ निकलीं, तो उनके लिए यह मंदिर बनाया गया। यहां देवी महालक्ष्मी के साथ महाकाली और महासरस्वती भी विराजती हैं। दीपावली और नवरात्रि पर यहां का दृश्य अद्भुत होता है – फूलों, दीपों और आरती की ध्वनियों से पूरा वातावरण दैवीय बन जाता है। यह मंदिर बताता है कि भक्ति, चाहे महानगर की भीड़ में क्यों न हो, अपना मार्ग खोज ही लेती है।

लक्ष्मी देवी मंदिर, डोड्डगद्दावल्ली (कर्नाटक)

कर्नाटक के हासन जिले में स्थित यह मंदिर 1113 ईस्वी में बना था और यह होयसल स्थापत्य का दुर्लभ उदाहरण है। चारों दिशाओं में गर्भगृह वाला यह 'चतुश्कुट' मंदिर अपने आप में अनूठा है। मुख्य देवी लक्ष्मी के साथ यहां काली, विष्णु और शिव की उपासना भी होती है – यह इस भूमि की धार्मिक समरसता का प्रतीक है। नवरात्रि के समय यहां का वातावरण संगीत और श्रद्धा से भर जाता है।

अष्टलक्ष्मी मंदिर, हैदराबाद (तेलंगाना)

चेन्नई के मंदिर से प्रेरित यह अष्टलक्ष्मी मंदिर हैदराबाद में 1996 में बना। इसकी भव्य गोपुरम और देवी के आठ स्वरूपों की मूर्तियाँ इसे विशेष बनाती हैं। यहां की वास्तुकला दक्षिण भारत की समृद्ध परंपरा का दर्पण है।

वरलक्ष्मी मंदिर, मंगलगिरि (आंध्र प्रदेश)

मंगलगिरि का यह मंदिर देवी लक्ष्मी और भगवान नरसिंह के संयुक्त रूप को समर्पित है। यहां की 'पानक अभिषेक' परंपरा प्रसिद्ध है – जिसमें भगवान को गुड़ का रस अर्पित किया जाता है। ब्रह्मोत्सव के समय यहां श्रद्धालुओं की अपार भीड़ उमड़ती है।

गजलक्ष्मी मंदिर, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

महाकाल की नगरी उज्जैन में शिप्रा नदी के तट पर स्थित गजलक्ष्मी मंदिर देवी लक्ष्मी के गजलक्ष्मी रूप को समर्पित है। इस रूप में देवी हाथी पर विराजमान रहती हैं। जो ऐश्वर्य और सौभाग्य का प्रतीक है। माना जाता है कि इस मंदिर का निर्माण प्राचीन काल में हुआ था और गुप्त व परमार शासकों ने इसका विस्तार कराया। नागर शैली में बने इस मंदिर का गर्भगृह सरल होते हुए भी भव्य है। दीपावली और नवरात्रि पर यहां विशेष पूजा-अभिषेक होते हैं। गजलक्ष्मी मंदिर उज्जैन की आध्यात्मिक पहचान है, जो भक्तों को सुख, शांति और समृद्धि का आशीर्वाद देता है। महाकालेश्वर और गजलक्ष्मी – दोनों मिलकर उज्जैन को पूर्णता प्रदान करते हैं।

महालक्ष्मी मंदिर, रतलाम (मध्य प्रदेश)

रतलाम का महालक्ष्मी मंदिर अपनी अनोखी परंपरा के लिए प्रसिद्ध है। दीपावली के समय भक्त अपने सोने-चांदी के आभूषण और नकदी देवी को अर्पित करते हैं। लाखों की यह सजावट न केवल भव्यता का प्रदर्शन है, बल्कि विश्वास का उत्सव भी है। यह परंपरा दर्शाती है कि सच्ची लक्ष्मी वही है, जो लोककल्याण में प्रयुक्त हो। नवरात्रि और दीपावली पर यहां का दृश्य मन मोह लेता है।

लक्ष्मी नारायण मंदिर, ओरछा (मध्य प्रदेश)

ओरछा का यह मंदिर अपने स्थापत्य और रहस्यमयी इतिहास के लिए प्रसिद्ध है। बुंदेला राजा बिर सिंह देव ने 1622 में इसे बनवाया था। मंदिर किले जैसी संरचना में बना है और इसकी दीवारों पर सुंदर भित्तिचित्र अंकित हैं। दीपावली की रात जब यहां आरती होती है, तो पूरा ओर्चा लोककला और भक्ति का जीवंत रूप बन जाता है।

लक्ष्मी मंदिर, खजुराहो (मध्य प्रदेश)

खजुराहो समूह के मंदिरों में यह छोटा-सा मंदिर भी अपनी कला और सौंदर्य के लिए अद्वितीय है। 10वीं शताब्दी में निर्मित यह मंदिर देवी लक्ष्मी को समर्पित है। इसकी भित्तियों पर उकेरी गई नक्काशियाँ प्राचीन भारतीय कला की सजीव झलक हैं। यहां के हर पत्थर में चंदेल युग की दिव्यता और शिल्पकार की भावना बसती है।

भारत के ये लक्ष्मी मंदिर केवल पूजा स्थल नहीं – वे हमारी आस्था, हमारी कला और हमारी संस्कृति के साक्षात प्रतीक हैं। कहीं स्वर्ण से झिलमिलाते, तो कहीं पत्थरों में गढ़े, ये मंदिर हमें याद दिलाते हैं कि सच्ची लक्ष्मी केवल धन में नहीं, बल्कि श्रद्धा, परिश्रम और करुणा में बसती है। दीपावली के इस पावन अवसर पर जब घर-घर दीप जलेंगे, तो आइए इन मंदिरों की स्मृति में हम भी अपने भीतर एक दीप जलाएं – भक्ति का, करुणा का और समृद्धि का।

संस्मरण

लाल बहादुर श्रीवास्तव

दिवाली का वो आदान-प्रदान महोत्सव

आज की महंगाई और सामाजिक विद्वेष के वातावरण में लोग त्योहार मना कहां पा रहे हैं; बल्कि वे मात्र त्योहार के व्यवहार तक ही सीमित रह गए हैं। पड़ोसी की दिवाली मनाए जाने के तरीके को अपने में ढालने के चक्कर में पड़ोसी के बच्चे का मन कुंठित हो रहा है; बिना पेंशन पाने वाले मर–मर कर जी रहे हैं, नौकरियाँ हैं नहीं, मगर पिता क्या करें सामान लाना ही पड़ेगा, क्योंकि त्योहार का व्यवहार भी तो निभाना ही पड़ेगा।

दिवाली सबसे बड़ा त्यौहार माना जाता है । दिवाली की खुशियां मात्र पटाखों में ही नही मिठाई में भी छिपी होती है।साफ सफाई के साथ साथ दिवाली के आने वाले घटते दिनों तक रंगरोगन चलता रहता है। रांगोली घर आंगन सजती है और हर घर में स्वादिष्ट मिठाईयां बनने का दौर शुरू हो जाता है ।आज तो अधिकांश घरों मे बाजार से मिठाईयां खरीद कर ही लाई जाती है। हमारी कामकाजी गृहणियों को इतना वक्त कहां ,नौकरी से थकी मांदी आकर मिठाईयां बनाने के पचड़े मे पड़े।

बात मिठाई बनाने के साथ साथ दीवाली के दूसरे दिनों से आस पास कालोनी मुहल्ले में मिठाई आदान प्रदान महोत्सव की भी है। लगभग पांच दशक पहले की बात है जब हमारे पड़ौसी आज की तरह अजनबी न होकर पारिवारिक हितैषी हुआ करते थे। दुख सुख में दिन रात काम आते थे। आज पड़ौसी पड़ौसी से बेखबर इस लिए है क्योंकि हम कलयुग की और बढ़ रहे है ।दिवाली पर बनने वाली मिठाईयों की भीनी भीनी सुगंध आने पर मालूम हो जाता था किसके यहां कौन सी मिठाई बन रही है ।

अक्सर मिठाईयों में अनारसे,बेसन चक्की खोपरापाक, बालूशाही, मैसूरपाक, नमकीन मीठी पपड़ी, घेवर, गूंजियां सेव मिक्र्र शकर पारे हुआ करते थे । ऐसा माना जाता था जिन घरों मे गृहणियों के हाथ सधे हो और जिनके हाथों कांच की क्राकरी न टूटती हो वे गृहणियां गुलाब जामुन अच्छे खासे बना लेती थी ।

मां के साथ पिताजी ही नही घर के हर सदस्य पक्के हलवाई की तरह इन्हें बनाने में दो तीन दिन पहले से ही जुट जाते थे।इतनी भरपूर मात्रा में व्यंजन बनाते थे कि घर के सदस्यों के साथ साथ दीपावली मिलन समारोह मे आने जाने वाले मेहमानों के साथ-साथ पड़ौसियों को भी घर घर जाकर आदान प्रदान महोत्सव की परम्परा का निरवहन करते मिठाईयां बांट आए। मां बड़े बडे कनस्तरों मे इन्हें भरकर रखती थी । कभी -कभी तो घर के सभी लोग मिलकर दिवाली के पहले ही इन मिठाईयों का सफाया कर देते थे । फिर से साहस जुटाकर मिठाईयां बनानी होती थी।

उस जमाने मे न काजूकतली थी न छप्पन व्यंजन न बगाली लजीज मिठाईयां।परम्परागत मिठाई घर- घर बनती ,बस हौड़ उनमे यहीं मचती किसके घर कौन सी मिठाई मुंह को पानी लाने वाली लजीज बनी है।

हम जैसे घर के छोटे छोटे बच्चे आई पी एस

की तरह घर-घर पड़ौसियों मुहल्ले की गलियों में दीवाली की मिठाईयां सुंदर थाली में सजाकर मां के हाथ का बना क्रोशिए का रूमाल ढ़क कर आदान प्रदान महोत्सव अन्तर गत बांटने जाते थे। अनुशासित तरीके से थालियां ले जाते ,अगर हाथ हिल गये तो सब गुड गोबर हो जाया करता था। कभी कभी तो पड़ौसियों के घरों से नदारद हो जाने के कारण दो दो चक्कर लगा कर घनचक्कर बन जाया करते थे तब जाकर मिठाईयां थाली की बंट पाती थी। अक्सर सभी को इंतजार रहता था कि पहले दूसरों के यहां से मिठाईयां सजधज कर आए, फिर हम बांटे,जिससे मिठाईयों का अनुपात बराबर रह सके।ये भी देखा जाता था जिस घर से जितनी मिठाईयां आई है उतनी रखकर हम बच्चों के हाथों भिजवा दी जाए। ऐसा भी होता था जब किसी के घर से अच्छी मिठाई आती मां कामकाज में व्यस्त होती हम बच्चे थाली में से अच्छी मिठाई मां को बिन बताएं नजरों से गप गपा गप कर जाते थे। मिठाईयां बाटने में भी स्टैण्डरड मैंटेन करना होता था।

बड़ा ही जोखिम भरा काम होता था ।सुबह से शाम मां को थालियां जमाते जमाते हो जाया करती थी। तीस पैतीस घर बांटना मामूली सी बात थी।उस जमाने में घर मे दो तीन भाई बहन तो होते ही थे जो आज्ञाकारी होकर मां का हाथ बटाते थे वे मां के द्वारा बताई गली नापकर मिठाईयां बांट आते थे । आज परम्परा जीवित होती तो हमारे परिवारों के कई इकलौते लाड़ले बच्चे मिठाईयां घर की खूंटी पर ही बांधकर इतिश्री कर लेते या व्हाटसअप पर ही भेज देते। आज समय बदल गया है।समयाभाव हो गया है।

और हां उस समय मां के साथ बच्चे इतने जोर - जोर से ठहाके लगाते थे अगर पिताजी घर पर दफ्तर से आ गये होते वे भी इन ठहाकों मे शामिल हो जाया करते थे, जब घर की भेजी मिठाई किसी पडौसी के यहां से अपने ही घर बिना कोई रन बनाए बेग टू द पवेलियन लौट आती थी ।

इसमें पड़ौसी का दोष नही, सुधबुध का दोष रहता था।शरमा जी के यहां से या वरमाजी के यहां से मिठाई आई थी सबूत के तौर पर इसका कोई लेबल नही लगाया जाता था। चूक हुई और ये सब पल भर में खेला हो गया,भेजी मिठाई वापस देखकर ऐसा लगता था जैसे दूसरे घर की मुफ्त यात्रा कर सकुशल घर लौट आई हो।

दिवाली आते ही मां की स्मृतियों के साथ साथ वे दिन फ्लेशबैक की तरह आंखो से उतर कर हंसी ठहाकों की तरह होठों पर आ ही जाते है जब आदान प्रदान महोत्सव में हमारे पड़ौसियों मे स्वार्थभाव न होकर परस्पर स्नेह सद्भाव एक दूजे के साथ रहता था आज शनैः शनैः लुप्त होता जा रहा है।

कविता

एक दीप उनके नाम

नलिन खोईवाल

जो गुमनाम है,
गुमराह है,
बदनाम है,
उनकी चौखट पर जलाएँ,
एक दीप उम्मीदों का।

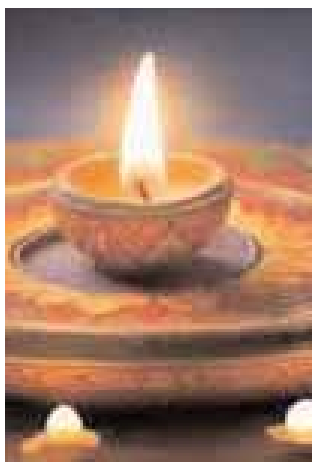

जो अनाम है,
बेदाम है,
बेकाम है,
उनकी चौखट पर जलाएँ,
एक दीप आस और विश्वास का।

जो बेबस है,
लाचार है,
निराश्रित है,
उनकी चौखट पर जलाएँ,
एक दीप प्यार का।

हम जिएँ,
नन्हे दीपक का जीवन,
और करें .....
औरों की ज़िंदगियाँ रौशन।

नन्हा दीया

पल-पल अंधियारा छलता है,
पर हिम्मत न हारूंगा,
नन्हा दीया कहता है।

शनैः-शनैः तम हटता है,
जब तक यह,
नन्हा दीया जलता है।

कितना घना हो,
पथ में तिमिर भले,
नन्हा दीया न डरता है।

बस...यह तो,
धुन में अपनी,
तम हरने को खुद ही,
अविरल जलता रहता है।

दीपावली

डॉ. भूपेन्द्र कुमार सुल्लेरे

सनातन धर्म और सत्य की विजय का उत्सव

अंधकार से प्रकाश तक का मार्ग भारत में दीपावली केवल दीपों का पर्व नहीं, बल्कि सत्य, धर्म और प्रकाश की विजय का उत्सव है। यह वह क्षण है जब असत्य, अधर्म और अंधकार पर सत्य, धर्म और प्रकाश की जीत होती है। यह पर्व सनातन धर्म की उस अनादि भावना का प्रतीक है, जो 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' के मंत्र में निहित है। दीपावली को 'पंचदिवसी उत्सव' कहा गया है – धनतेरस से भैया दूज तक पाँच दिनों का यह पर्व जीवन के पाँच आयामों – स्वास्थ्य, आत्मशुद्धि, सत्यप्रकाश, प्रकृति-संतुलन और स्नेह-संबंध – की अभिव्यक्ति है। धनतेरस : आरोग्य और समृद्धि का संदेश कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को मनाया जाने वाला धनतेरस केवल धन अर्जन का पर्व नहीं है, बल्कि आयुर्वेद के देवता धन्वंतरि की आराधना का दिन है। इस दिन धातु का क्रय शुभ माना गया है क्योंकि यह शरीर में धातु संतुलन और स्वास्थ्य संरक्षण का वैज्ञानिक प्रतीक है। ऋतु परिवर्तन के इस समय में तांबे और चाँदी जैसे धातु बर्तन शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं।

धनतेरस हमें यह सिखाता है कि सच्चा धन शरीर और मन की स्वस्थता है। नरक चतुर्दशी: आत्मशुद्धि और अहंकार पर विजय

अगले दिन नरक चतुर्दशी का पर्व आता है, जो श्रीकृष्ण द्वारा नरकासुर वध की स्मृति में मनाया जाता है। यह असुरता, अहंकार और दुराचार के अंत का प्रतीक है। इस दिन स्नान, उबटन और दीपदान का विधान है – जो शरीर व मन दोनों की शुद्धि का संकेत है। आधुनिक भाषा में कहें तो यह दिन हमें नकारात्मकता से मुक्ति और आत्मबल के जागरण की प्रेरणा देता है।

दीपावली अमावस्या: प्रकाश का आध्यात्मिक उत्सव

कार्तिक अमावस्या को अंधकारमय रात्रि में जब दीप प्रज्वलित होते हैं, तो वह केवल घर नहीं, बल्कि मन के कोनों को भी आलोकित करते हैं। यह वही दिन है जब भगवान श्रीराम 14 वर्षों के वनवास के बाद अयोध्या लौटे। वैज्ञानिक दृष्टि से, इस रात्रि में घी या तिल के तेल के दीपक जलाने से वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, और वायु में उपस्थित हानिकारक जीवाणु नष्ट होते हैं। दीपावली इसलिए प्रकाश का नहीं, बल्कि 'प्रकाशमान जीवन' का पर्व है – जहाँ आत्मा और सत्य का दीप जलता है।

गोवर्धन पूजा : प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का दिवस अगले दिन गोवर्धन पूजा के रूप में श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत उठाकर इंद्र के अहंकार को समाप्त करने की स्मृति मनाई जाती है। यह पर्व हमें प्रकृति-पूजन और पर्यावरण संरक्षण का संदेश देता है। गोबर, गोमय और अन्नपूर्णा के प्रतीक इस दिन के आयोजन मानव और प्रकृति के सह-अस्तित्व को दर्शाते हैं। आज जब विश्व जलवायु संकट से जूझ रहा है, तब गोवर्धन पूजा का यह भाव पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है – 'प्रकृति की रक्षा ही ईश्वर की सच्ची आराधना है।'

भैया दूज : स्नेह और सुरक्षा का बंधन

पंचदिवसी का अंतिम पर्व भैया दूज है, जो बहन और भाई के स्नेह का प्रतीक है। बहन द्वारा तिलक लगाने की परंपरा केवल संस्कार नहीं, बल्कि परिवारिक बंधन की आत्मीयता का उत्सव है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि परिवार और समाज का ताना-बाना स्नेह और विश्वास पर ही टिका है।

वर्तमान समय में दीपावली का वास्तविक अर्थ आज दीपावली का स्वरूप बाजार और आतिशबाजी के शोर में कहीं खोता जा रहा है। लेकिन इसका मूल संदेश आत्मप्रकाश, संयम और सदाचार का है। जब हम दीप जलाते हैं, तो वह केवल अंधकार मिटाने के लिए नहीं, बल्कि मन के विकारों को दूर करने के लिए जलाया जाता है।

तिल के तेल का दीपक, वैज्ञानिक रूप से सिद्ध है कि वह वातावरण में निगेटिव आयन छोड़ता है, जो मानसिक शांति और स्फूर्ति प्रदान करते हैं।

सत्य और सनातन की अनंत ज्योति दीपावली हमें यह सिखाती है कि सत्य, धर्म और प्रकाश कभी समाप्त नहीं होते। वे केवल प्रतीक्षा करते हैं – जब हम उन्हें पुनः अपने भीतर खोजें। यह पर्व हर वर्ष स्मरण कराता है कि –

'जहाँ प्रकाश है, वहाँ जीवन है;
जहाँ सत्य है, वहाँ सनातन है।'

दीपावली वास्तव में सत्य की विजय, आत्मा के प्रकाश और धर्म की प्रतिष्ठा का उत्सव है – जो भारत की आत्मा में अनंतकाल तक जलता रहेगा।

दीपावली पंचदिवसी पर्व है – धनतेरस से भैया दूज तक पाँच आयामों का उत्सव।

धनतेरस स्वास्थ्य और धन्वंतरि आराधना का प्रतीक, वैज्ञानिक रूप से प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने का संकेत।

नरक चतुर्दशी आत्मशुद्धि और अहंकार-विनाश का संदेश देती है। दीपावली अमावस्या – प्रकाश का आध्यात्मिक और वैज्ञानिक संगम, पर्यावरण शुद्धि का अवसर।

गोवर्धन पूजा – प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण की सनातन प्रेरणा। भैया दूज – परिवारिक स्नेह, विश्वास और एकता का उत्सव। आधुनिक युग में दीपावली का अर्थ – आत्मप्रकाश, संयम और सत्य का जीवन।

दीपोत्सव पर्व को लेकर तैयारियां पूरी, आंगन में सजने लगी आकर्षक रांगोली

दीपावली आज, घर-आंगन में जलेंगे खुशियों के दीप

बैतूल। धन की देवी मां लक्ष्मी का त्यौहार दीपावली, हर्षोल्लास से मनाने की लोगों ने तैयारी पूरी कर ली है। नागरिकों द्वारा मां लक्ष्मी के स्वागत के लिए अपने-अपने घर प्रतिष्ठानों का रंग रोगन कर आकर्षक रूप से सजा लिया गया है। नागरिकों को इंतजार है तो बस मां लक्ष्मी की कृपा का, ताकि उनकी मनोकामनाएं पूर्ण हो सके। मां लक्ष्मी के स्वागत में लोगों ने अपने-अपने घर और आंगन को जहां सजा-धजा रखा है, वहीं आकर्षक रंगोलियां भी उकेरी गई है। आज दीपावली पर मां लक्ष्मी का विधि-विधान से पूजन के उपरांत प्रत्येक घर और आंगन में खुशियों के दीप जलाएं जाएंगे। उसके बाद बड़े बुजुर्गों समेत बच्चों द्वारा आकर्षक रंगीन आतिशबाजी का लुफ्त देर रात्रि तक उठाया जाएगा। वैसे पिछले कई दिनों पूर्व से ही बाजार खील-बताशे, मोरपंख, झाड़ू सहित कमल एवं गेंदे के फूलों की दुकानों से बाजार में सज चुका है। दीपावली पर्व का उत्साह लोगों में इस बार काफी अलग है। वैसे तो धनतेरस से ही पांच दिवसीय दीपोत्सव की शुरूआत हो गई है, लेकिन दीपावली पर पटाखे फोडने की ललक बच्चों को सुबह से उत्साहित करती है। दीपावली को लेकर वाट्सएप, फेसबुक, इस्ट्राग्राम, व्हाट्सअप सहित अन्य एप के माध्यम से दीपावली की शुभकामनाएं देने का सिलसिला शुरु हो गया। दीपावली पर्व पर माता लक्ष्मी को प्रसन्न करने घरों को बंधनवारों से सजाया जा रहा है।

बाजारों में रही भीड़, जमकर हुई खरीदारी- दीपावली त्यौहार के एक दिन पूर्व शहर के गंज और कोठीबाजार में नागरिकों की खासी चहल-पहल बनी रही। मां लक्ष्मी के पूजन अर्चना में किसी भी प्रकार की कोई कमी न रह जाए, इसको दृष्टिगत रखते हुए नागरिकों द्वारा जमकर फूल-पान समेत पूजन की अन्य सामग्रियों की खरीदी की गई। दुकानदारों द्वारा दीपावली को लेकर पूरी तैयारी कर ली है। इधर सराफा, ऑटोमोबाइल सेक्टर, इलेक्ट्रॉनिक सामानों की जमकर खरीदारी हुई है। जिला मुख्यालय पर खरीदारी करने के लिए बैतूल से लगे आसपास के गांव के लोग भी बड़ी संख्या में पहुंचे। बाजार में मिट्टी से बने दीये बड़ी संख्या में बेचने के लिए लाए गए। इस बार लोगों ने मिट्टी से बने दीये की सबसे ज्यादा खरीदारी की। आर्टिफिशियल दीपों से किनारा कर लिया।

जगमग हुए शहर के मंदिर और घर- शहर के मंदिरों और घरों में भी दीपावली के त्यौहार के मद्देनजर आकर्षक रंगाई-पुताई कर विद्युत रोशनी की गई है। इसके अलावा मोहल्ले एवं कालोनियों में स्थित देवी-देवताओं के मंदिरों में भी नागरिकों द्वारा सजावट में कोई कसर नहीं छोड़ी है। आज दीपावली के त्यौहार पर नागरिकों द्वारा मंदिरों में दीपक जलाए जाएंगे, जिससे सभी मंदिर जगमग हो उठेंगे। ऑटोमोबाइल सेक्टर में दोपहिया वाहनों की जमकर खरीदारी हुई है। गंज स्थित खण्डेलवाल हीरो, टीवीएस शोरूम, आदित्य होंडा शोरूम और में वाहनों की खरीदारी करने के लिए ग्राहकों की भीड़ लगी रही।

मिठाइयों की सजी दुकानें- शहर में दीपावली के त्यौहार को लेकर होटल संचालकों द्वारा अपने-अपने प्रतिष्ठान के समक्ष रंग-बिरंगी मिठाइयों की दुकान सजा रखी है। महावीर मिष्ठान के संचालक राजेश जैन ने बताया कि मिठाई की दुकानों पर 300 रुपए किलो से लेकर 1500 रुपए किलो तक मिठाई बिक रही है। इसके अलावा ड्राई फूड से बनी मिठाइयां भी लोगों की खासी पसंद बनी हुई है, वहीं दीपावली के त्यौहार को लेकर नागरिकों द्वारा अपने-अपने घरों पर सीरीज सहित विद्युत रोशनी कर जहां आकर्षक सजावट की गई है।

आनन्द हिन्दू वात्सल्य आश्रम पीपलखेड़ा के निराश्रित बच्चों के साथ डिस्टेंस स्पोर्ट्स एकेडमी ने मनाई दीपावली

सच्ची खुशी दूसरों को खुशी देने में है

धार। आनन्द हिन्दू वात्सल्य आश्रम पीपलखेड़ा के निराश्रित बच्चों के साथ डिस्टेंस स्पोर्ट्स एकेडमी ने मनाई दीपावली । इस बार भी डिस्टेंस स्पोर्ट्स एकेडमी, धार ने पहल करते हुए ड्राई फ्रूट, कपड़े ओर मिठाइयां, चॉकलेट तथा कपड़े वितरित कर फटाके , फोड़ कर खुशियों का इजहार किया इस पल को महसूस कर उपस्थित बच्चे खुशी से भावुक हो गये ।

दीपावली का त्योहार आ गया और हमारी संस्था ने सोचा कि क्यों न इसे किसी वात्सल्य आश्रम में मनाया जाए। चल पड़े अपने साथियो के साथ जहां हमें देखकर बच्चों के चेहरे पर मुस्कान आ गई। वहां उपस्थित बच्चों के साथ दीप जलाए , रंगोली बनाई , और पटाखे जलाए। उनकी खुशी देखकर बहुत आनंद आया। हमने उन्हें दीपावली के पावन अवसर पर कइ उपहार भी दिए। इस अनुभव ने हमे सिखाया कि दीपावली का असल मतलब है अंधकार को दूर करना और प्रकाश की जीत का जश्न मनाना। वहां के बच्चों ने दिखाया कि सच्ची खुशी दूसरों को खुशी देने में है। कुछ ऐसा ही पल संजोए धार की डिस्टेंस स्पोर्ट्स एकेडमी के अध्यक्ष सचिन बाफना ने ओर उनके साथियो ने ,जिन्होंने शहर से कुछ दूरी पर स्थित आनन्द हिन्दु वात्सल्य आश्रम पीपलखेड़ा पहुंच कर वहां के निराश्रित बच्चों को प्रतिवर्षानुसार इस बार भी पहल करते हुए ड्राई फ्रूट, कपड़े ओर मिठाइयां ,चॉकलेट तथा कपड़े वितरित कर फटाके , फोड़ कर खुशियों का इजहार किया इस पल को महसूस कर उपस्थित बच्चे खुशी से भावुक हो गये और उन्होंने एक ऐसे अनुभव को महसूस जो अपने भी नहीं दे सकते ।

इस अवसर पर समिति के सचिव विधि बाफना ,राजेश डाबी, मंथन बाफना, मिस्टी बाफना, काव्य सिसोदिया, अरुण यादव, पूरब जोशी उपस्थित थे ।

जिले में अभी तक 1009.0 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज

बैतूल। जिले की औसत वर्षा 1083.9 मि.मी. है तथा जिले में अभी तक 1009.0 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज की गई है, जबकि गत वर्ष इस अवधि तक 1064.3 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज की गई थी। जिले में 19 अक्टूबर 2025 को प्रातः 8 बजे समाप्त 24 घंटों के दौरान 1.4 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज की गई है। अधीक्षक भू-अभिलेख ने बताया कि 19 अक्टूबर 2025 को प्रातः 8 बजे तक तहसील बैतूल में 5.8, घोड़ाडोंगरी में 0.0, चिचोली में 6.2, शाहपुर में 0.0, मुलताई में 0.0, प्रभात पट्टन में 0.0, आमला में 0.0, भैंसदेही में 0.0, आठनेर में 2.1 तथा भीमपुर में 0.0 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज की गई है।

गोवर्धन पूजन कार्यक्रम 22 अक्टूबर को

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशानुसार बैतूल मुख्यालय के ग्राम झगडिया स्थित त्रिवेणी गौशाला में 22 अक्टूबर को गोवर्धन पूजन कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। पशुपालन एवं डेयरी विभाग उपसंचालक सुरजीत सिंह ने बताया कि दोपहर 12 बजे से आयोजित कार्यक्रम के दौरान गोवर्धन पूजा की जाएगी। तत्पश्चात गौशाला में कार्यरत गौ सेवकों का सम्मान किया जाएगा। वहीं गौमाता के व पंचगव्य के उत्पादों पर संगोष्ठी भी आयोजित की जाएगी। उन्होंने सभी विभागों के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं आमजन से कार्यक्रम में उपस्थित होने का अनुरोध किया है।

शासकीय आयुर्वेदिक औषधालय में मनाई धन्वंतरि जयंती

निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का हुआ आयोजन

बैतूल। शासकीय आयुर्वेदिक औषधालय गर्ग कॉलोनी में 18 अक्टूबर को भगवान धन्वंतरि जयंती बड़े श्रद्धा भाव और उत्साह के साथ मनाई गई। इस अवसर पर निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में आयुर्वेद के प्रति जनजागरूकता और श्रद्धा का अद्भुत संगम देखने को मिला। कार्यक्रम में जिला आयुष अधिकारी डॉ. योगेश चौकीकर, डॉक्टर दीपक कड़वे, पार्षद नंदिनी तिवारी, राम नगर पार्षद अशोक नागले, पूर्व पार्षद संजू सोलंकी, समाजसेवी शशि किरण राजपूत, रिटायर्ड कंपाउंडर कुसुम बाई पांसे, बलवंत राव सोनी तथा इंदिराबाई सोनी सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। सभी अतिथियों ने भगवान धन्वंतरि के चित्र पर माल्यार्पण कर आरती की और आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के संरक्षण एवं प्रसार का संकल्प लिया। कार्यक्रम का वातावरण पूर्णतः धार्मिक और स्वास्थ्य जागरूकता से परिपूर्ण रहा।

सड़क हादसे में इकलौते बेटे की मौत

बैतूल। भैंसदेही विकासखंड के ग्राम पंचायत दादूढाना के सोहन कवडे के इकलौते बेटे कृष्णा कवडे की कन्याकुमारी जिले के पलायम पट्टी क्षेत्र में एक सडक़ दुर्घटना में मौत हो गई। हादसे के तीन दिन बाद जब कृष्णा का शव गांव पहुंचा, तो पूरे इलाके में शोक की लहर दौड़ गई। कृष्णा अपने साथियों के साथ कन्याकुमारी स्थित जय सुंदर एलुमिनियम कंपनी में मजदूरी करने गया था। वह दीपावली पर घर लौटने की तैयारी में था, लेकिन हादसे के कारण उसकी मौत हो गई। शव के गांव पहुंचते ही परिवार में मातम छा गया। ग्रामीणों के अनुसार, कृष्णा एक मेहनती और हंसमुख युवक था। उसने कुछ ही महीनों में काम सीख लिया था और दीपावली के बाद घर लौटकर अपने परिवार के साथ रहना चाहता था।

पराली जलाने वालों से एमएसपी पर नहीं होगी सरकारी खरीदी

फसल अवशेष मुक्त पंचायतों को मिलेगा पुरस्कार, समिति करेगी कार्रवाई

बैतूल। खेतों में नरवाई (फसल अवशेष) जलाने वाले किसानों पर अब सरकार सख्ती करेगी। बार-बार नरवाई जलाते पाए जाने वाले किसानों से न्यूनतम समर्थन मूल्य (एसएसपी) पर सरकारी खरीदी नहीं की जाएगी। इसके साथ ही, जुर्माना भी लगाया जाएगा। वहीं जो ग्राम पंचायतें अपने क्षेत्र को नरवाई जलाने से मुक्त रखेंगी, उन्हें जिला प्रशासन द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा। दरअसल रबी और खरीफ फसलों की कटाई के बाद खेतों में नरवाई जलाने की घटनाएं बढ़ रही हैं, जो देश के अन्य राज्यों की तुलना में ज्यादा हैं। इससे खेत की उपजाऊ मिट्टी खराब हो रही है और गंभीर वायु प्रदूषण भी फैल रहा है। इसी को रोकने के लिए यह कदम उठाए जा रहे हैं। नरवाई जलाने की घटनाओं को रोकने और दोषियों पर कार्रवाई के लिए हर जिले में एक जिला स्तरीय समिति बनाई गई है। यह समिति फसल अवशेष जलाने वालों पर दंडात्मक और प्रशासनिक कार्रवाई करेगी। नियमों का उल्लंघन करने वाले किसानों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

नरवाई मुक्त पंचायतों को मिलेगा ईनाम- कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी ने बताया कि किसानों को नरवाई जलाने से रोकने और इसके दूसरे उपयोगों के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से एक नई पहल की जा रही है। जो ग्राम पंचायतें अपने गांव को फसल अवशेष जलाने से मुक्त ग्राम बनाएंगी, उन्हें जिला प्रशासन द्वारा सम्मानित किया जाएगा। कृषि उप संचालक डॉ. आनंद बडोनिया ने बताया कि एक टन धान के भूसे को जलाने से मिट्टी को मिलने वाले कई कीमती पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। इनमें लगभग 5.5 किलो नाइट्रोजन, 2.3 किलो फास्फोरस, 25 किलो पोटेशियम, 1.2 किलो सल्फर और करीब 400 किलो कार्बन शामिल है। ये सभी जलाने से पूरी तरह खत्म हो जाते हैं।

नरवाई जलाने के होते हैं गंभीर नुकसान

बताया जाता है कि खरीफ और रबी फसल की कटाई के बाद खेतों में बचने वाले अवशेष को किसान आग लगाकर जला देते है। इससे कृषि भूमि की उपजाऊ शक्ति कम होती है। इसके अलावा मिट्टी में मौजूद जैविक तत्व और लाभकारी जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। वायु प्रदूषण बढ़ता है, जिससे इंसानों और पशुओं के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। धुएं से दृश्यता कम होती है, जिससे सडक़ दुर्घटनाओं का खतरा बढ़ता है। पशुओं के चारे (भूसा) की बर्बादी होती है। इन सभी कारणों को देखते हुए प्रशासन द्वारा किसानों को समझाईश दी जा रही है कि वे नरवाई न जलाये।

इनका कहना है -

धान के भूसे को जलाने से मिट्टी को मिलने वाले कई कीमती पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। इनमें लगभग 5.5 किलो नाइट्रोजन, 2.3 किलो फास्फोरस, 25 किलो पोटेशियम, 1.2 किलो सल्फर और करीब 400 किलो कार्बन शामिल है। ये सभी जलाने से पूरी तरह खत्म हो जाते हैं।

- डॉ. आनंद बडोनिया,
उप संचालक, कृषि विभाग बैतूल

बैतूल में दीपावली पर स्वास्थ्य-सुरक्षा के विशेष इंतजाम

जिला अस्पताल में खुली रहेगी ओपीडी, यातायात डायवर्ट, पुलिस तैनात

बैतूल। दीपावली पर्व के मद्देनजर स्वास्थ्य और पुलिस प्रशासन ने सुरक्षा व व्यवस्था के लिए विशेष इंतजाम किए हैं। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी ने बताया कि अवकाश के दिनों में भी ओपीडी सेवाएं उपलब्ध रहेंगी, जबकि पुलिस ने कानून-व्यवस्था और यातायात प्रबंधन के लिए व्यापक तैयारी की है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी के अनुसार, 19 और 21 अक्टूबर को सुबह 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक जिले की सभी स्वास्थ्य संस्थाओं में ओपीडी सेवाएं जारी रहेंगी। इन दिनों सभी चिकित्सा अधिकारी, विशेषज्ञ और अन्य स्टाफ मरीजों के उपचार के लिए उपलब्ध रहेंगे। आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाएं 24 घंटे चालू रहेंगी। जिला अस्पताल के आकस्मिक कक्ष में अतिरिक्त स्टाफ तैनात किया गया है। दीपावली पर जलने के मामलों की आशंका को देखते हुए बर्न वार्ड में विशेष इंतजाम किए गए हैं और चिकित्सा दलों को सतर्क रहने के निर्देश दिए गए हैं। किसी भी आपात स्थिति में मरीजों को तुरंत अस्पताल पहुंचाने के लिए एम्बुलेंस चालकों को भी तैयार रखा गया है।

तीन स्थानों पर बनाई पार्किंग- पुलिस प्रशासन ने कानून-व्यवस्था और यातायात प्रबंधन के लिए व्यापक तैयारी की है। टीआई सत्यप्रकाश सक्सेना ने बताया कि बाजार, सराफा दुकानों, बैंकिंग संस्थानों और भीड़भाड़ वाले इलाकों में विशेष चौकसी बरती जा रही है। इसके लिए अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया है। ट्रैफिक इंचार्ज गजेंद्र केन के अनुसार, नगरपालिका के सहयोग से तीन स्थानों पर पार्किंग स्थल बनाए गए हैं और कुछ मार्गों पर भारी वाहनों का प्रवेश प्रतिबंधित किया गया है। पुलिस अधीक्षक वीरेंद्र जैन के निर्देश पर कोठी बाजार और गंज बाजार क्षेत्रों में अतिरिक्त पुलिस बल, पैदल गश्त और मोबाइल पेट्रोलिंग की व्यवस्था की गई है। यातायात को सुचारु बनाए रखने के लिए निर्भया मोबाइल और यातायात क्रेन मोबाइल के माध्यम से लगातार निगरानी रखी जा रही है।

बाइक अनियंत्रित होकर सर्विस रोड से नदी में गिरी, चालक की मौत

बैतूल। चिचोली थाना क्षेत्र में शनिवार रात एक भीषण सडक़ हादसे में 19 साल के युवक की मौत हो गई। घटना इंदौर हाईवे पर सिंगारखापा और सीताडोंगरी के बीच हुई। मृतक की पहचान कपिल यादव के रूप में हुई है। जानकारी के अनुसार कपिल रोज की तरह शनिवार रात भी चिचोली से बाइक से गांव लौट रहा था। इसी दौरान उसकी बाइक अनियंत्रित होकर हाईवे के सर्विस रोड से फिसलकर नीचे ढलान में नदी में जा गिरी। आशंका है कि गिरने के दौरान सिर में गंभीर चोट लगने से उसकी मौके पर ही मौत हो गई। सूचना मिलते ही चिचोली पुलिस मौके पर पहुंची और रविवार सुबह शव को नदी से बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेजा गया।

कांग्रेस का वोट चोर गद्दी छोड़ अभियान

पूर्व मंत्री पांसे ने घर-घर पहुंच कर कराए हस्ताक्षर

बैतूल/ मुलताई। अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कमेटी द्वारा वोट चोर गद्दी छोड़ राष्ट्रव्यापी हस्ताक्षर अभियान के तहत आज पूर्व कैबिनेट मंत्री सुखदेव पांसे के नेतृत्व में बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने पवित्र नगरी मुलताई के घर-घर पहुंचकर अभियान के पक्ष में हस्ताक्षर कराए, अभियान के पहले इंदिरा गांधी वार्ड में पूर्व विधायक पांसे के निवास पर मुलताई एवं दुनावा ब्लॉक के कांग्रेस कार्यकर्ताओं की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में प्रदेश उपाध्यक्ष पांसे ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए बताया कि कांग्रेस ने पूरे प्रदेश के घर-घर पहुंचकर लगभग 5 करोड़ लोगों के हस्ताक्षर कराने का लक्ष्य रखा है। इस अभियान के माध्यम से लोगों में अपने अधिकारों के प्रति जागृति आ रही है कांग्रेस के अभियान को संपूर्ण प्रदेश में बड़ी सफलता मिल रही है अब कांग्रेस कार्यकर्ताओं की जवाबदेही है कि अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचकर इस अभियान का संदेश आम व्यक्ति तक पहुंचाएं। बैठक को संबोधित करते हुए पांसे ने कांग्रेस संगठन की रीति-नीति से कार्यकर्ताओं को अवगत एवं संगठन को कैसे मजबूत बनाना है इस संबंध में विस्तार से चर्चा की। इस अवसर पर पूर्व विधायक डा. पी.आर. बोडखे, रामू टेकाम, आनंद राजपूत, संजय यादव, कमल सोनी, राजरानी परिहार इत्यादि ने कार्यक्रम को संबोधित किया। इसके उपरांत कार्यकर्ताओं के द्वारा पांसे के नेतृत्व में वोट चोर गद्दी छोड राष्ट्रव्यापी हस्ताक्षर अभियान के समर्थन में घर-घर जाकर आम जनों के हस्ताक्षर कराये गये। इस अवसर पर कार्यक्रम में अनुराग मिश्रा, भूषण कांति, पिंटिश नागले, जितेन्द्र शर्मा, महेन्द्र सिंह परमार, कशोर सिंह परिहार, हाजी शमीम खान, रमेश गायकवाड, प्रहलाद सिंह परमार, सुमित शिवहरे, शेख जाकिर, राजेश बंदु बारंगे,आशीष जैन, अरूण यादव,आशीष सोनी, मुन्ना रघुवंशी, राजेन्द्र कवडक़र, रवि खाड़े, रामराव उकण्डे, प्रेम बोरबन, लोकेश यादव, भोजराज रघुवंषी, जयदेव भुजाडे, युवराज भिकोण्डे, हेमराज धोटे, संजीव चढोकार, गणेष शिवहरे, विनोद बेले, टिनू मिश्रा, सुरेश झरे, सुरदास रघुवंषी, यशवंत देशमुख, महेश नागले, अशोक धाड़से, राजेश उईके, गोविंद कवड़े, सुभाष लोखण्डे सहित भारी संख्या में कांग्रेसी कार्यकर्ता गण उपस्थित थे।

दिवाली के लिए फूल तोड़ने गया युवक कुएं में डूबा

बैतूल। चिचोली थाना क्षेत्र में रविवार को एक युवक की कुएं में डूबने से मौत हो गई। युवक दिवाली पूजन के लिए फूल तोडने खेत पर गया था, तभी पैर फिसलने से वह कुएं में जा गिरा। छोटे भाई ने उसे बचाने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हो सका। सूचना पर पहुंची एसडीईआरएफ की टीम ने शव को कुएं से बाहर निकाला। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार, ग्राम सिंगराईखापा निवासी आकाश पिता महेंद्र (28) रविवार को दिवाली के लिए फूल तोडने खेत की ओर गया था। बताया जा रहा है कि फूल तोड़ते समय अचानक उसका पैर फिसल गया और वह पास में ही बने कुएं में जा गिरा। हादसे के वक्त आकाश का छोटा भाई भी वहीं मौजूद था। उसने आकाश को डूबते हुए देखा और तुरंत रस्सी लाने के लिए दौडा। जब तक वह रस्सी लेकर लौटा और आसपास के ग्रामीण मौके पर पहुंचे, तब तक आकाश की डूबने से मौत हो चुकी थी। घटना की सूचना मिलते ही चिचोली पुलिस मौके पर पहुंची। शव को कुएं से बाहर निकालने के लिए राज्य आपदा आपातकालीन प्रतिक्रिया बल की टीम को बुलाया गया। प्लाटून कमांडर सुनीता पंद्रे के नेतृत्व में रेस्क्यू दल ने शव को कुएं से बाहर निकालकर पुलिस को सौंपा। इसके बाद शव को पोस्टमॉर्टम के लिए चिचोली अस्पताल भेजा गया। जांच अधिकारी सुनील राठौर ने बताया कि प्रारंभिक जांच में युवक के कुएं में फिसलने से डूबने की आशंका है। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने पूर्व मंत्री बिसाहुलाल सिंह के पुत्र के निधन पर व्यक्त किया शोक

भोपाल । उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने आज अनूपपुर जिले के प्रवास के दौरान ग्राम पंचायत परासी में पूर्व मंत्री एवं विधायक अनूपपुर श्री बिसाहूलाल सिंह के पुत्र श्री अमृतलाल सिंह के निधन पर गहन शोक व्यक्त किया है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने दिवंगत आत्मा की शांति तथा शोकाकुल परिवार को यह दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की है। इस अवसर पर विंध्य विकास प्राधिकरण के पूर्व उपाध्यक्ष श्री अनिल गुप्ता, श्री राम दास पूरी, पूर्व जनपद अध्यक्ष पुष्पराजगढ़ श्री हीरा सिंह श्याम सहित अन्य जनप्रतिनिधि, पत्रकारगण मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने भोपाल के दिवंगत युवक उदित गायकी के पिता श्री राजकुमार गायकी व परिजनों से मुख्यमंत्री निवास में मुलाकात कर सांत्वना दी और हर संभव मदद का भरोसा दिया।

उपमुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने जिला चिकित्सालय अनूपपुर का किया निरीक्षण

भोपाल । उपमुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने आज जिला चिकित्सालय अनूपपुर का निरीक्षण किया। उन्होंने चिकित्सालय परिसर, विभिन्न वार्डों एवं आपातकालीन सेवाओं की स्थिति का जायजा लिया तथा मरीजों को उपलब्ध कराई जा रही चिकित्सा सुविधाओं की विस्तृत जानकारी प्राप्त की। निरीक्षण के दौरान उपमुख्यमंत्री ने उपस्थित चिकित्सकों एवं अधिकारियों से चर्चा की और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता सुनिश्चित करने पर बल दिया।

उपमुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि मरीजों को समय पर, सुरक्षित एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराना शासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि उपचार में किसी भी प्रकार की लापरवाही स्वीकार्य नहीं होगी। चिकित्सालय में स्वच्छता व्यवस्था बनाए रखने, आवश्यक जीवनरक्षक दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने तथा चिकित्सा उपकरणों के सुचारू उपयोग पर विशेष ध्यान देने के निर्देश भी दिए।

उन्होंने कहा कि ग्रामीण एवं दूरस्थ अंचलों से आने वाले मरीजों को भी सहज, त्वरित एवं संतोषजनक चिकित्सा सुविधाएँ मिलनी

चाहिए। इस अवसर पर मध्य प्रदेश कोल विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री राम लाल रौतेल, कलेक्टर श्री हर्षल पंचोली, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ आर के वर्मा, सिविल सर्जन, पूर्व अध्यक्ष जनपद पंचायत पुष्पराजगढ़ श्री हीरा सिंह श्याम सहित अन्य जनप्रतिनिधि, अधिकारी, पत्रकारगण एवं आमजन उपस्थित थे।

सभी जिलों के प्रमुख सार्वजनिक स्थलों और गौशालाओं में गोवर्धन पूजा का आयोजन हो धूमधाम से : मुख्यमंत्री

भोपाल । मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश की सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक विरासत को सहेजने के लिए 21 और 22 अक्टूबर को सभी जिलों के प्रमुख सार्वजनिक स्थलों और गौशालाओं में गोवर्धन पूजा का आयोजन धूमधाम से किया जाए। इन आयोजनों में मंत्री, सांसद, विधायक, नगरीय निकायों और पंचायत प्रतिनिधियों सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि शामिल हों। स्थानीय स्तर पर सक्रिय सांस्कृतिक मंडलों को शामिल करते हुए कार्यक्रमों को उत्सव के रूप में मनाया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रविवार को मुख्यमंत्री निवास से आगामी त्योहारों के संबंध में प्रदेश के सभी सांसद, विधायक, जिला कलेक्टर -पुलिस अधीक्षक- नगरीय निकायों के पदाधिकारी और अधिकारियों को वीसी के माध्यम से संबोधित किया।

माया श्रीवास्तव का निधन, 21 अक्टूबर को होगा अंतिम संस्कार

भोपाल। स्वर्गीय महा नारायण श्रीवास्तव एवं राधा देवी श्रीवास्तव की पुत्रवधू, चौबदारपुरा तलैया निवासी संजय श्रीवास्तव की धर्मपत्नी, अ.भा.कायस्थ महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री कर्मचारी नेता अजय श्रीवास्तव नीलू की भाभी, पत्रकार मलय श्रीवास्तव और जनसंपर्क विभाग के पूर्व संयुक्त संचालक प्रलय श्रीवास्तव की बहिन नागरिक आपूर्ति निगम की सेवानिवृत सहायक प्रबंधक श्रीमती माया श्रीवास्तव का आज नोएडा के अस्पताल में इलाज के दौरान निधन हो गया। वे 62 वर्ष की थी तथा कैंसर से पीड़ित थी। उनका अंतिम संस्कार 21 अक्टूबर को सुबह 10 बजे भदभदा विश्राम घाट पर होगा।माया श्रीवास्तव की अंतिम यात्रा 21 अक्टूबर को सुबह 9.30 बजे 2/2 चौबदारपुरा से निकलेगी ।

विधानसभा अध्यक्ष श्री तोमर ने प्रदेशवासियों को दीपावली की दीं शुभकामनाएं

भोपाल । विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने प्रदेशवासियों के सुख, शांति, समृद्धि और सौभाग्य की मंगलकामना करते हुए दीपावली पर्व की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दीं। श्री तोमर ने अपने संदेश में कहा हमारे प्रदेश का प्रत्येक घर धन-धान्य से परिपूर्ण रहे तथा विघ्नों से दूर रहे। रोशनी एवं विजय का यह दिव्य और पावन पर्व सभी के जीवन से अंधकारों को मिटा दे। हर घर में दीवाली हो, हर घर में दीया जले। हर दीया घर - घर में सुख-समृद्धि की रोशनी लाए।

दीप पर्व

डॉ. लोकेन्द्रसिंह कोट

लेखक स्तंभकार हैं।

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय

दीपक किसी भी परिस्थिति में निराशा नहीं ओड़ता है। इतने गंभीर तिमिर को भी हरा कर अपनी उपस्थिति को दर्ज करता है। यही आत्मविश्वास है जिसे इस प्रकृति में सभी को प्रदान किया है। अब प्रश्न यही उठता है कि इसे हमें पहचान पाते हैं या नहीं। बगैर आत्मविश्वास के सारी नकारात्मकता एकत्र होने लगती है और यही दानवी वृत्ति में बदल जाती है। देव और दानव में इसी आत्मविश्वास का ही फर्क है। रोशनी और अंधेरे जितना फर्क।

दीपक प्रकाश का पुंज है। उसकी लौ सदैव ऊपर की ओर रहती है। ऊंचाई की ओर जाने का लक्ष्य ही प्रगति का आधार है। प्रगति की ओर अभिमुख होने पर अज्ञानता और मलिनता स्वयं भागने लगती है। ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास ही अज्ञानता को उसी प्रकार भगा देता है, जिस प्रकार कोई विद्वान किसी अल्पज्ञानी को। ज्ञान अपरिमित होता है। दीपक का प्रकाश भी उचित जगह फैलता है। अतः आलोकित होने वाली दीपावलियाँ हमें निरंतर ज्ञान का संदेशा देती है। ज्ञान प्रगति का द्वार है। प्रगति भी तर्क संगत प्रगति, ज्ञान सम्मत प्रगति। अब देखिए न, इन दिनों चारों ओर प्रगति का ढ़िढोरा पीटा जा रहा है लेकिन क्या वह तर्क संगत प्रगति है? कहीं हम प्रगति की आड़ में भारी कीमत तो नहीं चुका रहे हैं? तर्क संगत और चिरस्थाई प्रगति ही सार्थक प्रगति हो सकती है। पिछले पच्चीस-चालीस वर्षों में हमने कृषि में कथित प्रगति तो की परंतु इसी प्रगति के चक्कर में हमने कई मुसीबतों को भी बुला लिया है, रसायनों के अंधाधुंध प्रयोग ने हमें कई बीमारियों से लपेट कर रख दिया है और यह धीमा जहर लगातार हमारे जीवन का हिस्सा है।

दीपक बहुत ही असाधारण वस्तु हैं। प्रकृति ने एक अद्भुत ताना-बाना बुना होता है। कहते हैं कि पांच भौतिक तत्वों ने परस्पर मिल-जुलकर इंसान जैसी अनोखी चीज का निर्माण किया। ये तत्व हैं - मिट्टी, पानी, आग, हवा और आकाश। छोटा सा दिखने वाले दीये के निर्माण में भी इन्हीं तत्वों - मिट्टी, पानी, आग, हवा और आकाश का योगदान है। अपनी गांव का ही कुम्हार ताल-तलैया से, चिकनी मिट्टी लाता है। डंडे से पीटकर उसे महीन करता है। थोड़ा-थोड़ा पानी डालकर उसे करमोकर गूंथता है। खरपतवार और कंकर-पथर निकालकर उसका 'लोना' बनाता है। इसके बाद बहुत सहज ढंग से उसे चाक पर रखता है। चाक के वल में बैठकर वह डंडे के सहारे उसे चक्रवत तेज चलाना शुरू करता है। अपने दोनों हाथ चाक के बीचों-बीच रखे 'लोना' के चारों और अपनी कलात्मक अंगुलियां घुमाता है। हीरा कुम्हार के मन की बात और उसकी अंगुलियों की करामात है कि वह एक निर्जीव चाक के माध्यम से बड़े-बड़े घड़े बनाता है या छोटे-छोटे दीये। कुम्हार की अँगुलियों से होते हुए चाक पर रखा मिट्टी का लोंदा अपना सुसंस्कृत आकार ग्रहण करता है, समय के साथ सूखता है और फिर गर्म आंच में पकता है, इसके बाद कुम्हारिन के नाजुक हाथों से रंगता है, सुर्ख रंग में चमकता है, आकर्षित करता है। अब इस दीपक में तेल या घी भरा जाता है जो कई प्रक्रियाओं से गुजरते हुए उस दिए की शान बनता है। खेतों में लगने वाले श्वेत कपास और उसकी बत्ती बनाने वाली घर की बुढ़िया, इन सबके तन-मन, नेह-निष्ठा, आस्था, विश्वास समन्वित रूप से दीपक की लौ के रूप में उजागर होते हैं, तब दीपक के रूप में सूर्य का वंशज अंधकार में जन्म लेता है। लगता है कि सूर्य अपनी ज्योर्तिमयी देह को लक्ष-लक्ष दीए के रूप में विभक्त करके हर दर के अंधेरे पर विजय प्राप्त करने के निमित्त अपने स्व का प्रतिदान करने पर उतारू है। कहते हैं इस संसार में जो सबसे महत्वपूर्ण और मानक वही है जो बाँटता है, जैसे ईश्वर, वह सिर्फ बाँटता ही है इसलिए वही मानक है। दीपक भी सिर्फ अपनी देह जलाकर बाँटता ही है और दूसरों के मार्ग रोशन करता है, इसलिए वह भी मानक ही है। देवता की स्तुति के लिए उसी दीपक का प्रयोग किया जाता है। इससे स्पष्ट संदेश जाता है कि ज्ञान का प्रकाश ही वह मार्ग है जो आपको ईश्वर तक पहुँचा सकता है।

जलती लौ की अपनी अनूठी कहानी

अंधकार और प्रकाश वास्तव में लगते हैं एक दूसरे के विपरीत, लेकिन हैं एक दूसरे के पूरक ही। है न कैसा विरोधाभास!! अब बताईये दुनिया में सिर्फ केवल अंधेरा ही हो तो कैसा लगेगा? सब कुछ वीरान होगा और यदि दुनिया में सिर्फ प्रकाश ही प्रकाश हो अंधेरे का नामोनिशान न हो तो, कब सोना है, कब उठना है.... पता ही नहीं चलेगा..... नहीं? तो प्रकाश का महत्व इसलिए है क्योकि अंधेरा है और अंधेरे का महत्व भी इसलिए है क्योकि प्रकाश है। अब यदि कोई ऐसी फिल्म देखेगा जिसमें खलनायक न हो..... सब कुछ बोरिंग लगेगा..... इसलिए एक हीरो का महत्व खलनायक ही बढ़ाता है और खलनायक का महत्व भी एक हीरो बढ़ाता है। यानि की अंधेरा और प्रकाश एक दूसरे के विपरीत नहीं वरन् पूरक हैं। एक हैं तो दूसरे का महत्व है और दूसरा है तो पहले का महत्व है।

दीपक के प्रति आज भी हमारी वहीं लगन मिलती है जो आदिकाल में अग्नि के प्रति पाई जाती होगी। उस समय मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु अंधकार था और इसका हरण करने वाला प्रकाश सबसे बड़ा मित्र। रात के अंधकार के बाद उषा के उजास के देखकर वैदिक कवि शीघ्र प्रकाश की कामना से कहता है ''हे उषा की पहली किरण, तुम अन्धकार को ऋण की तरह दूर कर दो।'' प्रकाश हमें देखने की शक्ति देता है। वस्तु की सही पहचान के लिये ज्योति आवश्यक है। वृहदारण्यक उपनिषद में इसलिए अंधकार से ज्योति की ओर जाने की कामना की गई है।

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय

ऋग्वेद में इन्द्र के पश्चात यदि किसी के गुणों का उल्लेख किया गया है तो वह है अग्निदेव। अग्नि के तीन रूपों का विशद वर्णन मिलता है - पृथ्वी पर अग्नि, अंतरिक्ष में विद्युत और आकाश में सूर्य। उसके जन्म के विषय में कहा गया है कि इस संसार का सबसे अबाधित, अजन्मा और अमर काल है और जब काल का संघर्ष मंथन होता है तो उससे सिर्फ अग्नि का ही जन्म होता है। काल के दिए गए यह उपहार आज समस्त संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हैं। किसी न किसी स्वरूप में इन्हे पूजा जाता हैं, मंत्रों में अभिव्यक्त किया जाता है, इबादत में शामिल किया जाता है। बगैर अग्नि के कोई अनुष्ठान सिर्फ भारतीय ही नहीं कई संस्कृतियों में अधूरा माना गया है।

कुम्हार उस अमावस की तैयारी कर रहा होता है जो अंधकार को लाने वाली है। उसका भी एक ही हठ है कि उसे वह रोशन करके ही मानेगा। जीवन भी इसी तरह है उसमें कभी अमावस है तो कभी पूनम। कभी खुशी तो कभी गम। लेकिन जीवन तो उसी का नाम है जो हर अमावस को उन धैर्य रूपी दिए से रौशन कर दे और जीवन को सदैव आलोकित रखे। कुम्हार दीपावली के समय वह असंख्य दीया बनाने में जुटा है। उसे देखकर लगता है कि पृथ्वी रूपी चक्र चक्रवत चल रहा है और सृष्टि का नियामक बड़े इम्तिहान के साथ बैठकर अपनी मनचाही मूर्तियां गढ़ रहा है। यही सही माईनो में जीवन चक्र है। आज के समय में एक अमावस ही लोगों को भयभीत कर देती है उन्हे अवसाद से घेर देती है, कई तो घबराकर अपनी इहलीला भी समाप्त कर बैठते हैं..... समाज कहने बैठ जाता है इतना कमजोर निकला माटी का पुतला.....। वैसे भी नष्ट तो होना ही था एक दिन..... कम से कम अपने लिए ही नहीं दूसरों के लिए जीते.....। अभी इस इम्तिहान में हमारी पीढ़ी लगातार फेल हो रही है। 'रेडिमेड' के इस युग में हम उस दिए की निर्माण कथा और संघर्ष को जान ही नहीं पाते हैं जो कई कसौटियां पार कर आया है। हम स्वयं में ही ज्यादा उलझे हैं..... दूसरों के प्रति हमारी सोच संकुचित हो चली है इसलिए हम आत्मकेन्द्रित हो गए हैं। अपने साथ दूसरों का भी ख्याल हमें उसी दिए की तरह सर्वव्यापक बनाता है, सार्थक बनाता है और फिर स्वतः ही बरकत बरसती है।

ताप और प्रकाश का संवाहक

विज्ञान की बात है कि सूर्य स्थिर है, पृथ्वी चलती हैं। सूर्य एक ही समय पृथ्वी के आधे भाग को प्रकाश देता है और शेष को अंधकार। सूर्य मूलतः ताप और प्रकाश का संवाहक है, किंतु विशुद्ध ताप और प्रकाश में किसी जीवन का उद्भव संभव नहीं हो सकता। जीवन के उद्भव के लिए एक ही कोशिश में प्रकाश और अंधकार का अवांतर बना रहना अनिवार्य हैं सूर्य इसीलिए अपनी प्रिया धरती को एक साथ प्रकाश और अंधकार मय धरती के एक साथ प्रकाश और अंधकारमय रखता है, तब उसी निर्मित भी प्रकाश और अंधकारमय होगी ही, इसलिए धरती की संतान आदमी को नैसर्गिक रूप से अपने विवेक के कारण अंधकार से जूझने और जद्दोजहद करने की आदत पड़ जाती है। सूर्य भी इस अभियान में धरती की संतान - आदमी की सहायता करना है। अपनी संतान दीया को आदमी की कुटिया में सजाकर सूर्य सोचता है कि जहां मैं नहीं पहुँच सका, वहाँ मेरी संतान दीया ही अपनी महीन रोशनी से मेरी अवस्थिति को बनाये रखे हुए है।

एक संत अपनी कुटिया में देर रात तक एक दीपक जलाकर कुछ अध्ययन करते रहे और उन्हें नींद आने लगी तो उन्होंने दिए को बुझाया। जैसे ही उन्होंने दिए को बुझाया तो उन्होंने देखा थोडी ही देर में उनकी कुटिया में चाँदनी छिटक आई है, वे सोचने लगे इतने से दिए ने इतनी सशक्त चांदनी को भी बाहर रोक रखा था.....। वे चमत्कृत थे एक नन्हे दिए की इस विषालता पर। ऋग्वेद में यह भी वर्णन है कि भृगु ऋषि ने अग्नि की खोज की। वहीं से अग्नि संस्था का जन्म हुआ - इंद्र ज्योतिः, अमृतं मर्त्येषु.....''ऋग्वेद'' तथा ''सूर्यांश संभवों दीपः'' अर्थात सूर्य के अंश से दीप की उत्पत्ति हुई। जीवन की पवित्रता, भक्ति अर्चना और आशीर्वाद का दीप एक शुभ लक्षण माना जाता हैं सूर्य के अंश से पृथ्वी की अग्नि को जिस पात्र में स्थापित किया गया है वह आज सर्वशक्तिमान दीपक के रूप में हमारे घरों में है। इसलिए कहा भी गया है,

शुभम करोति कल्याणम् आरोग्यम् धन सम्पदा
शत्रुबुद्धि विनाशाय दीपज्योति नमस्तुते।।

सुन्दर और कल्याणकारी, आरोग्य और सम्पदा को देने वाले हे दीप, शत्रु की बुद्धि के विनाश के लिए हम तुम्हें नमस्कार करते हैं। ऐसे मंगलदायी दीप के लिये भक्त के मन में आदरयुक्त भावना उत्पन्न हुई होगी और इसी ने दीपक को कलात्मक रूप से गढ़ना शुरू कर दिया होगा।

दीपावली पर विशेष

संध्या राजपुरोहित

लेखक आदिवासी क्षेत्र में कार्यरत सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

दीपक - रोशनी घर में नहीं, दिलों में जलाएँ

अंधकार में छोटा-सा दीप भी उम्मीद का प्रतीक बन जाता है। दिवाली उसी उम्मीद का उत्सव है, जहाँ प्रकाश, प्रेम और आशा एक साथ जन्म लेते हैं। लेकिन हर साल जब घर-आँगन दीयों से जगमगाते हैं, तो मन यह पूछता है क्या यह उजाला हमारे भीतर भी उतरा है? क्या यह रोशनी हमारे दिलों के अंधेरे को भी मिटा पा रही है?

हमारे चारों ओर कृत्रिम रोशनी की चकाचौंध है, पर भीतर संवेदनाओं का दीप मंद पड़ता जा रहा है। यही वह अंधकार है जिसने इंसान के भीतर की करुणा, दया और अपनापन को ढक लिया है। अब त्यौहार भी उपभोग और प्रदर्शन का प्रतीक बनते जा रहे हैं – जहाँ दीये बाज़ार से आते हैं, मिठाई ऑनलाइन आती है, और शुभकामनाएँ एक क्लिक में खत्म हो जाती हैं। जो पर्व कभी रिश्तों को जोड़ते थे, अब वे 'सेल' और 'ऑफर' के पोस्टरों में खो गए हैं। रोशनी बढ़ी है, पर उसका ताप कम हो गया है। पर क्या इस चमक-दमक के बीच हम अपने भीतर की संवेदनाओं को भी जागृत कर पा रहे हैं? क्या केवल घर और गली ही रोशन हैं, या हमारे रिश्तों और हृदयों में भी वही प्रकाश फैला है?

शहरों की भागदौड़, बढ़ता एकाकीपन, और सोशल मीडिया का आभासी संसार हमें दूसरों से दूर करता जा रहा है। पहले मोहल्ले दुख-सुख में साथ खड़े होते थे, आज वही लोग स्क्रीन के पीछे से 'रिएक्शन' भेजते हैं। हम सुविधाएँ बढ़ाते जा रहे हैं, पर संवेदनाएँ घटती जा रही हैं। संवेदनाएँ अब 'लाइक' और 'इमोजी' में बदल गई हैं। यह बदलाव केवल सामाजिक नहीं, भावनात्मक भी है – और यही हमारी असली चिंता होनी चाहिए।

समाजशास्त्र की दृष्टि से देखें तो संवेदनाओं का क्षरण एक गहरी सामाजिक समस्या है। शहरीकरण, एकल परिवार, बढ़ती प्रतिस्पर्धा और उपभोक्तावादी संस्कृति ने व्यक्ति को आत्मकेंद्रित बना दिया है।हर व्यक्ति अब 'मैं' के घेरे में सिमट गया है। ऐसे में ÷हम÷ की अवधारणा धीरे-धीरे विलुप्त हो रही है।

संवेदनाएँ कम होने का सबसे बड़ा परिणाम यह है कि समाज में सहानुभूति का स्थान उदासीनता ने ले लिया है। जहाँ पहले किसी का दुख सामूहिक होता था, वहाँ अब हर व्यक्ति केवल अपनी सुविधा का हिसाब रखता है। यही कारण है कि अपराध बढ़ रहे हैं, हिंसा और असमानता सामान्य होती जा रही है।

संवेदनाएँ ही हमारे समाज की आत्मा हैं। यही हमें इंसान बनाती हैं। जब ये कम होने लगती हैं, तो समाज में दूरी, उदासीनता और अकेलापन बढ़ जाता है। आधुनिक जीवन की भागदौड़ ने हमें इतना व्यस्त कर दिया है कि हम किसी की पीड़ा या अकेलेपन को महसूस करने का समय ही नहीं निकाल पाते। संवेदना – यह शब्द केवल किसी के दुःख में आँसू बहाने की क्रिया नहीं, बल्कि मानवता का मूल तत्व है। यह वह पुल है जो एक मनुष्य को दूसरे से जोड़ता है।

कभी हमारे समाज की पहचान ही यही थी कि कोई दुखी होता तो पूरा समुदाय उसके साथ खड़ा हो जाता। परंतु आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में यह भाव जैसे धुँधला पड़ गया है। हमने आधुनिकता और तकनीक के नाम पर अपने भीतर के इंसान

को खो दिया है। यही कारण है कि अकेलेपन, मानसिक तनाव और सामाजिक असमानता बढ़ती जा रही है।

इस बार, जब हम दीया जलाएँ, तो उसे केवल घर की देहरी पर न लगाएँ, बल्कि अपने दिल के कोने में भी जलाएँ। यह दीया उन लोगों के नाम हो सकता है जिनकी ज़िन्दगी में हम अनजाने में खुशियाँ भर सकते हैं। उस मजदूर के लिए जो दूसरों के घर सजाते-सजाते अपने घर के अंधेरे में सोता है। उस माँ के लिए जिसने अपने बच्चों की खुशी में अपनी इच्छाएँ भूल गई। उस बुजुर्ग के लिए जो आँगन में अकेला बैठकर पुरानी यादें गिनता है। उस बच्चे के लिए जिसकी हथेलियों में अब भी मेहनत की कालिख है। और उस इंसान के लिए जो अब भी भीड़ में भी दूसरों के दर्द को महसूस कर सकता है।

जब हम किसी का दुःख साझा करते हैं, किसी की मदद करते हैं, किसी अकेले के साथ समय बिताते हैं, तो वही असली दीप होता है। यही वह संवेदना है जो समाज को जोड़ती है और मानवता को जीवित रखती है। छोटे-छोटे कदम जैसे किसी को मुस्कान देना, किसी वृद्धाश्रम में समय बिताना, किसी ज़रूरतमंद के जीवन में खुशी लाना – ये सभी समाज में वास्तविक रोशनी फैलाने के उपाय हैं ।

हमें यह स्वीकार करना होगा कि संवेदनाएँ केवल किताबों में सिखाई जाने वाली बातें नहीं हैं,वे जीवन की वह सहजता हैं जो हर बच्चे के भीतर जन्मजात होती हैं। जब हम किसी के दुःख में साथ खड़े होते हैं, किसी की मदद करते हैं, किसी की आँखों में मुस्कान लाते हैं – तभी हम असली दीपक जलाते हैं।

बस आवश्यकता है उन्हें पोषित करने की – घर में, विद्यालय में, समाज में। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान नहीं, बल्कि चरित्र और करुणा का निर्माण होना चाहिए।स्कूलों और परिवारों में यह वातावरण बनाना होगा जहाँ बच्चे 'सफल' होने से पहले 'संवेदनशील' बनना सीखें।

त्योहारों को केवल उपभोग का नहीं, सेवा का अवसर बनाना होगा। जब हम दूसरों की खुशी में अपनी खुशी ढूँढ़ना शुरू करेंगे, तभी यह समाज फिर से उजाला महसूस करेगा। शिक्षा का उद्देश्य केवल करियर या सफलता नहीं होना चाहिए, बल्कि चरित्र, करुणा और सामाजिक चेतना का निर्माण होना चाहिए। जब हम दूसरों के जीवन में अपनी संवेदनाओं की रोशनी पहुँचाएंगे, तभी समाज वास्तव में उजाले का अनुभव करेगा।

दिवाली का असली अर्थ केवल घर को सजाने और दीप जलाने का नहीं है। यह पर्व हमें यह याद दिलाता है कि असली उजाला भीतर होना चाहिए। यह वह समय है जब हम अपने भीतर के स्वार्थ, ईर्ष्या और उदासीनता के अंधकार को मिटाकर, दूसरों के जीवन में रोशनी पहुँचाएँ। इस बार दीया जलाते समय एक क्षण रुकें और सोचें – क्या इस रोशनी का कोई असर किसी और के जीवन में भी पड़ा है? क्या किसी के चेहरे पर मुस्कान आई है? अगर हाँ, तो समझिए कि हमारी दीपावली सफल हुई।

सच्ची दिवाली केवल घर और गली की रौशनी नहीं, बल्कि दिलों की रोशनी है। यह वही रोशनी है जो हमें याद दिलाती है कि संवेदनाएँ ही इंसानियत का सबसे बड़ा दीपक हैं। घर का अंधेरा मिटाना आसान है, पर दिलों का अंधेरा मिटाना असली चुनौती है।

इस दिवाली, आइए हम केवल अपने घर नहीं, अपने दिलों को भी रोशन करें। इस बार एक दिया उन गुम होती संवेदनाओं के नाम जलाएँ, जो समाज में फिर से उम्मीद, अपनापन और मानवता की लौ जला सके। यही वह दीप है जो हर अंधकार को दूर करेगा और सच्ची रोशनी का प्रतीक बनेगा।

दीपोत्सव

डॉ. मनमोहन प्रकाश

लेखक प्राध्यापक हैं।

आत्म-प्रकाश से समाज-प्रकाश का पर्व

दीपोत्सव भारत का सबसे आलोकित पर्व है, परंतु इसका अर्थ केवल दीप जलाना नहीं, बल्कि वह अंधकार मिटाना है जो हमारे अंतर्मन में स्वार्थ, ईर्ष्या और असहिष्णुता के रूप में घर कर गया है। जब मनुष्य का मन अंदर से धुँधला जाता है, तब बाहरी रोशनी भी फीकी पड़ने लगती है। इसलिए दीपोत्सव का सच्चा संदेश यही है कि पहले मन के अंधकार को दूर करें, तभी संसार वास्तव में प्रकाशमय बनेगा।

यह पर्व हमें यह भी स्मरण कराता है कि असली दीप बाहर नहीं, भीतर जलाना है-वह भी सत्य, करुणा और सेवा की ज्योति से। जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपने अंतःकरण में सच्चाई,सहानुभूति और भाईचारे का दीप जलाएगा, उस दिन समाज अपने आप जगमगा उठेगा। वास्तव में दीपावली का आधार आत्मप्रकाश से समाज प्रकाश ही है।

यह पर्व भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में प्रकाश की विजय का प्रतीक है। यह हमें श्रीराम के अयोध्या लौटने की उस दिव्य रात्रि की याद दिलाता है, जब सत्य और धर्म का प्रकाश असत्य और अधर्म के अंधकार पर विजय प्राप्त करता है। तभी से दीपावली यह संदेश देती आई है कि प्रकाश का मार्ग ही मनुष्य का सच्चा मार्ग है।आज जब भारतीय समाज जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्र के नाम पर विभाजित होकर अविश्वास और असंवेदनशीलता की छाया में उलझा हुआ है, तब दीपोत्सव का महत्व और भी बढ़ जाता है। यह केवल घर सजाने या मिठाई बाँटने का अवसर नहीं, बल्कि दूसरों के जीवन में उजाला बाँटने का अवसर है। यदि हम किसी जरूरतमंद के घर में मुस्कान पहुँचा सकें, किसी गरीब या वंचित बच्चे को दीपोत्सव मनाने का अवसर दे सकें, किसी निराश व्यक्ति को सहारा दे सकें या किसी वृद्धाश्रम में खुशियाँ बाँट सकें, तभी यह पर्व सच्चे अर्थों में सार्थक होगा।

दीपावली का प्रकाश हमें यह भी सिखाता है कि प्रकाश की कोई सीमा नहीं होती, वह सबका होता है और सबको समान रूप से आलोकित करता है। सूर्य से भी हमने किसी के भी साथ भेदभाव नहीं करना सीखा है। इसी प्रकार दीपोत्सव हमें केवल अपने सुख में सीमित रहने की नहीं, बल्कि दूसरों के सुख-दुःख में सहभागी बनने की प्रेरणा देता है।

आज के युग में इस पर्व का एक और महत्वपूर्ण संदेश है- पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी। जब हम अपने देश की मिट्टी से बने दीए जलाते हैं, स्थानीय कलाकारों द्वारा निर्मित प्राकृतिक सजावटी वस्तुओं का प्रयोग करते हैं और हरित आतिशबाजी से उत्सव मनाते हैं, तब हम न केवल प्रकृति के प्रति आभार प्रकट करते हैं, बल्कि अपनी सांस्कृतिक विरासत का सम्मान भी करते हैं। वास्तव में संयमित, पर्यावरण-मित्र और स्वदेशी दीपावली ही हमारी सभ्यता की सच्ची पहचान है।

दीपावली का प्रकाश हमें यह बताने का प्रयास भी करता है कि सच्चा उत्सव तभी है जब मनुष्य का मन भीतर और बाहर दोनों से प्रफुल्लित होकर सत्य, सेवा और सद्भाव की लौ से अपना दीप जलाए। तभी समाज में स्थायी उजाला संभव है,जैसा कि उपनिषदों में कहा गया है 'तमसो मा ज्योतिर्गमय।'अर्थात्, हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो।

अतः इस दीपावली पर केवल घर नहीं, मन भी रोशन करें, क्योंकि परिवर्तन की शुरुआत हमेशा भीतर से होती है, और वही आत्मिक प्रकाश अंततः सामाजिक प्रकाश में परिणत हो जाता है।

अक्टूबर में मिला-जुला मौसम, नवंबर से तेज ठंड

एमपी के दक्षिणी हिस्से में आज से हल्की बारिश; भोपाल में बादल छाएंगे

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में अक्टूबर महीने में मौसम का मिला-जुला असर है। रात व सुबह हल्की ठंड है तो दिन में धूप का असर। मौसम विभाग की माने तो अक्टूबर में ऐसा ही मौसम रहेगा, लेकिन नवंबर के दूसरे सप्ताह से तेज ठंड का दौर शुरू हो जाएगा। इससे पहले शनिवार को मौसम का मिजाज बदला रहा। भोपाल में दिनभर बादल छाए रहे। इस वजह से दिन के तापमान में गिरावट देखी गई। वहीं, इंदौर, खंडवा में तेज बारिश हुई। उज्जैन समेत प्रदेश के कई शहरों में भी ऐसा ही मौसम रहा। मौसम विभाग के अनुसार, 20 अक्टूबर को हल्की बूंदाबांदी शुरू हो जाएगी। 21 अक्टूबर से दक्षिणी हिस्से के ज्यादातर जिलों में हल्की बारिश का दौर शुरू हो सकता है। इसमें मुख्य रूप से अनूपपुर, डिंडौरी, बैतूल, मंडला, खंडवा आदि जिले शामिल हैं।

आज से इन जिलों में असर- मौसम वैज्ञानिक अरुण शर्मा ने बताया कि 20, 21 और 22 अक्टूबर को बैतूल, नर्मदापुरम, खंडवा, हरदा, बुरहानपुर, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, बालाघाट, मंडला, डिंडौरी और अनूपपुर जिलों में कहीं-कहीं हल्की बारिश, गरज-चमक की स्थिति बनी रहेगी। 21 से पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र में एक पश्चिमी विक्षोभ का प्रभाव पड़ने

नवंबर-जनवरी में पड़ेगी कड़ाके की सर्दी

मौसम विभाग के अनुसार, नवंबर से कड़ाके की ठंड का दौर शुरू हो जाता है, जो जनवरी तक रहता है। इस बार फरवरी तक ठंड का असर रहने की संभावना है। मौसम वैज्ञानिकों का अनुमान है कि आने वाले सर्दियों के मौसम में 2010 के बाद सबसे भीषण ठंड का अहसास हो सकता है। सर्दियों के दौरान इस बार सामान्य से ज्यादा बारिश देखने को मिल सकती है, उत्तर-पश्चिम भारत के इलाकों में सक्रिय पश्चिमी विक्षोभ अधिक संख्या में प्रभावित करेंगे। आईएमडी ने भी जल्द ही ला-नीना परिस्थितियां विकसित होने की पुष्टि की है।

दिवाली से बदलेगी बाबा महाकाल की दिनचर्या

4 माह तक गर्म जल से स्नान करेंगे, महाकाल मंदिर में सुबह रूप चौदस, शाम को मनेगी दिवाली

उज्जैन (नप्र)। तिथियों के घटने-बढ़ने के कारण इस बार 20 अक्टूबर, सोमवार को सुबह रूप चौदस और शाम को दिवाली का पर्व मनाया जाएगा। उज्जैन के महाकाल मंदिर में सभी त्योहारों को देशभर में सबसे पहले मनाने की परंपरा है।

इसी परंपरा के तहत सुबह भस्म आरती के दौरान रूप चौदस पर भगवान महाकाल का गर्म जल से स्नान कराया जाएगा। इसके बाद पुजारी परिवार की महिलाएं भगवान को उबटन लगाएंगी और फुलझड़ी जलाकर दिवाली उत्सव की शुरुआत की जाएगी।

रूप चौदस के अवसर पर वर्ष में केवल एक बार पुजारी-पुरोहित परिवार की महिलाएं इस विशेष श्रृंगार में शामिल होती हैं और बाबा महाकाल का रूप निखारती हैं। इस दिन महिलाओं को ही यह अवसर मिलता है, जिसमें वे सुगंधित द्रव्यों से बाबा के लिए उबटन तैयार करती हैं। इसके बाद विशेष कर्पूर आरती होती है, जो केवल महिलाएं ही संपन्न करती हैं।

दीपावली पर रेलवे की विशेष तैयारी

भोपाल मंडल में सोमवार को सभी आरक्षण केंद्र सुबह 8 से दोपहर 2 बजे तक खुलेंगे

भोपाल (नप्र)। दीपावली और लक्ष्मी पूजा के अवसर पर रेलवे ने यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए भोपाल मंडल के सभी आरक्षण केंद्रों (पीआरएस) के समय में बदलाव किया है।

मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक (सीनियर डीसीएम) सौरभ कटारिया ने बताया कि सोमवार (20 अक्टूबर) को सभी आरक्षण केंद्र रविवार की भांति संचालित होंगे। यानी इनका समय सुबह 8 बजे से दोपहर 2 बजे तक रहेगा। वहीं, अनारक्षित टिकट काउंटर पूर्व की तरह नियमित रूप से कार्यरत रहेंगे।

कटारिया ने बताया कि दीपावली की भीड़ को देखते हुए यात्रियों को घर बैठे टिकट बुक करने की सुविधा देने के लिए रेलवे और आईआरसीटीसी की अधिकृत वेबसाइट और मोबाइल एप पर आरक्षण सेवा 24 घंटे चालू रहेगी।

दीपावली और छठ पूजा पर यात्रियों की अत्यधिक भीड़ को देखते हुए मंडल रेल प्रबंधक पंकज त्यागी के निर्देशन पर रेलवे ने टिकटिंग व्यवस्था को और सशक्त किया है। भोपाल, इटारसी, बीना सहित मंडल के प्रमुख स्टेशनों पर कुल 60 से अधिक टिकट जांचकर्मियों की विशेष ड्यूटी लगाई गई है।

थाने के बाहर लगे नारे-पुलिस तेरी गुंडागर्दी नहीं चलेगी

भोपाल में पटाखे बेचने वाले फुटपाथ दुकानदारों की जब्ती पर विवाद, पार्षद बोले- गरीबों का त्योहार छीन लिया

भोपाल (नप्र)। भोपाल में दीपावली से एक दिन पहले गौतम नगर थाना क्षेत्र में रविवार को पुलिस कार्रवाई के दौरान विवाद हो गया। नारियल खेड़े इलाके में पटाखे बेचने वाले फुटपाथ दुकानदारों की दुकानें जब्त करने के बाद व्यापारियों ने गौतम नगर थाने के बाहर जोरदार प्रदर्शन किया। इस दौरान भीड़ ने नारे लगाए 'पुलिस तेरी गुंडागर्दी नहीं चलेगी'। जानकारी के अनुसार, नारियल खेड़े में कुछ लोगों के परिवारों ने फुलझड़ी, अनार, जफरकनी जैसे हल्के पटाखों की छोटी दुकानें लगाई थीं। यह दुकानें महज दो दिन के लिए दीपावली के मौके पर लगाई गई थी। पुलिस ने इन दुकानों से सामान जब्त कर कार्रवाई की। स्थानीय पार्षद मनोज राठौर ने बताया, ये सभी फुटपाथ पर बैठने वाले छोटे दुकानदार हैं। इनके पास कोई बम या भारी पटाखा नहीं था। हर दुकान पर बस दो से पांच हजार रुपए का सामान था। पुलिस ने बिना वजह सात दुकानों की जब्ती बना ली और केस दर्ज कर लिया।

अब बिना बायो वाले स्टूडेंट भी बन सकेंगे नर्स

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश नर्सेस रजिस्ट्रेशन काउंसिल के निर्णय को सुप्रीम कोर्ट ने रद्द कर दिया है। अदालत ने स्पष्ट किया है कि राज्य में जीएनएम (जनरल नर्सिंग एंड मिडवाइफरी) और एएनएम(ऑक्जीलरी नर्सिंग एंड मिडवाइफरी) कोर्स में अब प्रवेश इंडियन नर्सिंग काउंसिल के नियमों के अनुसार ही होगा। आईएनसी के नियमों के मुताबिक, किसी भी सब्जेक्ट से 12वीं पास छात्र इन कोर्सों के लिए पात्र हैं। लेकिन मध्यप्रदेश नर्सेस रजिस्ट्रेशन काउंसिल ने मनमाने ढंग से बायोलॉजी विषय को अनिवार्य कर दिया था। जिससे कला और वाणिज्य संकाय के हजारों छात्र प्रवेश से वंचित हो रहे थे।

आईएनसी के दिशा-निर्देशों का पालन किया अनिवार्य- मध्यप्रदेश प्राइवेट नर्सिंग कॉलेज एसोसिएशन द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए अदालत ने कहा कि यह निर्णय छात्रों के साथ अन्यायपूर्ण था। सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि अब राज्य को आईएनसी के दिशानिर्देशों का ही पालन करना होगा।

दिवाली को लेकर हेल्थ एडवाइजरी जारी

विशेषज्ञों ने कहा- दिल की सुरक्षा के लिए गहरी सांस लें, खुजली होने पर आंखों को रगड़ें नहीं

भोपाल (नप्र)। दीपावली खुशियों और रोशनी का त्योहार है, लेकिन पटाखों का धुआं, तेज आवाजें और तले-भुने व्यंजन कई बार इस उत्सव को खतरे में बदल देते हैं। इसी चेतावनी को ध्यान में रखते हुए एम्स भोपाल ने इस बार दीपावली से पहले सुरक्षित त्योहार के लिए स्वास्थ्य दिशा निर्देश जारी किए हैं।

एम्स भोपाल के नेत्र, त्वचा, प्लास्टिक सर्जरी और हृदय रोग विभाग के विशेषज्ञों ने आंखों की सुरक्षा से लेकर त्वचा की देखभाल और हृदय स्वास्थ्य तक के लिए सुझाव दिए हैं।

आंखों को रगड़े नहीं- एम्स भोपाल की नेत्र विभाग प्रमुख डॉ. भावना शर्मा ने कहा कि पटाखों के छोटे टुकड़े या धूल के कण आंख में जाने पर तुरंत साफ पानी से धोएं, रगड़े नहीं। तेज दर्द, धुंधलापन या खून आने पर तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें। पटाखे जलाते समय सुरक्षा चश्मा पहनें और भीड़भाड़ वाले या धुएं से भरे इलाकों से बचें।

जलन पर न करें घरेलू इलाज

बर्न्स एंड प्लास्टिक सर्जरी विभाग के प्रमुख डॉ. मनाल खान ने कहा कि जलने पर घी, टूथपेस्ट या पेस्ट नहीं लगाएं। उन्होंने बताया कि सबसे पहले ठंडा पानी डालें और डॉक्टर से संपर्क करें। पटाखे सिर्फ खुले स्थानों पर जलाएं और पास में हमेशा पानी या अग्निशमन उपकरण रखें। बच्चों को कभी अकेला न छोड़ें।